कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 21 से 27 अक्टूबर 2025 ● वर्ष-26 ● अंक-22 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज (अन्नदाता) की ओर से दीपावली पूजन हेतु पोस्टर इस अंक के साथ निःशुल्क पाएं

एमएसपी में कोदो-कुटकी का किया जायेगा उपार्जन

मप्र मंत्रि-परिषद का निर्णय

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रमुख कोदो-कुटकी उत्पादक जिलों के कृषकों से पहली बार कोदो-कुटकी उपार्जन का किये जाने का निर्णय लिया, जिससे अधिक से अधिक जनजातीय कृषकों को फायदा होगा। इसके लिए रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना अंतर्गत प्रमुख कोदो-कुटकी उत्पादक जिलों जबलपुर, कटनी, मण्डला, डिंडोरी, छिंदवाड़ा, शहडोल, अनुपपुर, उमरिया, रीवा, सीधी एवं सिंगरौली के कृषकों से कोदो-कुटकी का उपार्जन किया जायेगा। साथ ही अन्य जिलों से मांग आने पर उन जिले के कृषकों से भी उपार्जन किये जाने पर विचार किया जायेगा।

श्रीअन्न उत्पादक जिलों के कृषकों से श्रीअन्न कंसोर्टियम ऑफ फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (श्रीअन्न फेडरेशन) द्वारा कोदो-कुटकी का उपार्जन किया जायेगा। खरीफ 2025 में उत्पादित श्रीअन्न कुटकी 3500 रूपये प्रति क्विंटल एवं कोदो 2500 रुपये प्रति क्विंटल के मान से लगभग 30 हजार मीट्रिक टन का उपार्जन किया जायेगा।

इसके लिए श्रीअन्न फेडरेशन को 80 करोड़ रूपये का ब्याज मुक्त ऋण शासन के मूल्य स्थिरीकरण कोष से प्रदाय किया जायेगा। इसके अतिरिक्त कृषको को प्रोत्साहन राशि के रूप में 1000 रुपये प्रति क्विंटल के मान से संबंधित कृषकों के खातों में डीबीटी के माध्यम से प्रदाय किये जायेंगे।

मंत्रि-परिषद द्वारा खरीफ वर्ष 2025 में प्रदेश के सोयाबीन के किसानों को लाभांवित किये जाने के लिए भारत सरकार की प्राईज डिफिसिट पेमेन्ट स्कीम लागू की गयी है, जो प्रदेश में भावांतर योजना कहलायेगी। प्रदेश में सोयाबीन भावांतर योजनांतर्गत 24 अक्टूबर, 2025 से 15 जनवरी, 2026 तक सोयाबीन का विक्रय, राज्य की अधिसूचित मंडियों में किया जायेगा। न्यूनतम समर्थन मूल्य से विक्रय दर/मॉडल रेट अंतर की राशि पंजीकृत कृषकों के पोर्टल पर दर्ज बैंक खाते में डी.बी.टी. के माध्यम से अंतरित की जायेगी।

मंत्रि-परिषद द्वारा भारत सरकार की सिल्क समग्र-2 योजना को 25 प्रतिशत राज्यांश के साथ, राज्य में रेशम समृद्धि योजना के रूप में क्रियान्वयन की सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की गई। योजना अंतर्गत हितग्राहियों को रेशम उत्पादन संबंधी 23 गतिविधियों में सहायता प्राप्त होगी, जिसमें सामान्य वर्ग के हितग्राही को इकाई लागत की 75 प्रतिशत और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के हितग्राहियों को 90 प्रतिशत आर्थिक सहायता प्रदान की जायेगी। इसमें क्रमशः 25 प्रतिशत एवं 10 प्रतिशत हितग्राही अंश रहेगा। योजना के क्रियान्वयन से मलबरी, वन्या और पोस्ट ककून क्षेत्रों में हितग्राहियों की सतत् रोजगार उपलब्ध होने के साथ उनकी आय में वृद्धि होगी। यह योजना रेशम किसानों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगी।

भावांतर योजना से किसानों को मिले अधिकतम लाभ : सुश्री भूरिया

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की प्राथमिकता वाली भावांतर भुगतान योजना की प्रगति की समीक्षा महिला एवं बाल विकास मंत्री और मंदसौर-नीमच जिले की प्रभारी मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हुई। बैठक में मंदसौर और नीमच जिलों के जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

सुश्री भूरिया ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में स्पष्ट निर्देश दिए कि किसानों को योजना का लाभ सुचारु रूप से और समय पर मिले, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने मंडियों एवं उपमंडियों में हेल्प डेस्क स्थापित करने, पर्याप्त मात्रा में पंजीयन केंद्र संचालित करने और प्रचार-प्रसार के माध्यम से योजना की जानकारी गांव-गांव तक पहुंचाने के निर्देश दिए। जिला प्रशासन ने खरीदी प्रक्रिया के लिए मंडियों में पेयजल, छांव, तकनीकी सहायता, रियल टाइम स्टॉक मॉनिटरिंग और मॉडल रेट निगरानी की प्रभावी व्यवस्था की है। खरीदी प्रक्रिया 24 अक्टूबर से 15 जनवरी 2026 तक प्रस्तावित है।सुश्री भूरिया ने कहा कि भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाकर उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान की जा रही है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे प्रत्येक स्तर पर यह सुनिश्चित करें कि किसानों को कोई परेशानी न हो और योजना का लाभ उन्हें पारदर्शी एवं सरल प्रक्रिया के तहत प्राप्त हो।

दुग्ध उत्पादन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ : श्री वर्मा

भोपाल। राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा ने कहा है कि दुग्ध उत्पादन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। दुग्ध उत्पादकों के कल्याण के लिए कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जिनसे किसानों और पशुपालकों की आय में वृद्धि हो रही है। श्री वर्मा ने सीहोर जिले के ग्राम टिटोरा में दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति मर्यादित टिटोरा के बोनस वितरण समारोह में यह बात कही।

खरीफ बुवाई में 6.51 लाख हेक्टेयर की बढ़ोतरी

▸ 1121.46 लाख हेक्टेयर में हुई खरीफ बुवाई
▸ केंद्रीय कृषि मंत्री ने बैठक में की कृषि क्षेत्र की समीक्षा

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में कृषि क्षेत्र की प्रगति को लेकर एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। इस बैठक में देशभर की खरीफ एवं रबी फसलों की स्थिति, बाढ़ प्रभावित राज्यों में फसलों की हालत, खाद-उर्वरक उपलब्धता, जलाशयों की स्थिति और मूल्य स्तर सहित कई प्रमुख बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार इस वर्ष खरीफ फसलों का कुल बुवाई क्षेत्रफल 1121.46 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष के 1114.95 लाख हेक्टेयर की तुलना में 6.51 लाख हेक्टेयर अधिक है। गेहूं, मक्का, गन्ना और दलहन फसलों की बुवाई में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। विशेष रूप से उड़द की बुवाई में 1.50 लाख हेक्टेयर की बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2024-25 में उड़द का क्षेत्रफल 22.87 लाख हेक्टेयर था, जो अब 24.37 लाख हेक्टेयर हो गया है।

बैठक में बाढ़ और अतिवृष्टि से प्रभावित राज्यों की स्थिति की भी समीक्षा की गई। श्री चौहान ने बताया कि उन्होंने हाल ही में बाढ़ और भूस्खलन प्रभावित जिलों का दौरा किया है। अधिकारियों ने अवगत कराया कि यद्यपि कुछ प्रदेशों में फसलें प्रभावित हुई हैं, लेकिन कुल मिलाकर देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून बेहतर रहा है। इससे रबी फसलों की बुवाई और उत्पादन में वृद्धि की उम्मीद जताई जा रही है। बैठक में सब्जी फसलों की स्थिति पर भी चर्चा हुई। अधिकारियों ने बताया कि प्याज का बुवाई क्षेत्रफल पिछले वर्ष के 3.62 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 3.91 लाख हेक्टेयर हो गया है। आलू का क्षेत्रफल 0.35 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 0.43 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। टमाटर का बुवाई क्षेत्रफल पिछले वर्ष की समान अवधि के 1.86 लाख हेक्टेयर से बढ़कर इस वर्ष 2.37 लाख हेक्टेयर हो गया है। कृषि मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि इन फसलों की बुवाई निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप और उत्साहजनक है। बैठक में यह भी जानकारी दी गई कि देश में चावल और गेहूं का वास्तविक स्टॉक बफर मानक से अधिक है।

देश के 161 प्रमुख जलाशयों में इस वर्ष का जल संग्रहण पिछले वर्ष की तुलना में 103.51 प्रतिशत और पिछले दस वर्षों के औसत से 115 प्रतिशत है। यह स्थिति रबी फसलों के लिए पर्याप्त सिंचाई जल की उपलब्धता का संकेत देती है। श्री चौहान ने उर्वरकों की आपूर्ति स्थिति की भी समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आगामी रबी सीजन में किसानों को उर्वरक की कोई कमी न हो। इसके लिए राज्यों और उर्वरक मंत्रालय के साथ निरंतर समन्वय बनाए रखा जाए।

महिलाओं के बिना खेती अधूरी : श्री चौहान

भोपाल। महिला किसान दिवस के मौके पर केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने महिला किसानों के बिना खेती को अधूरा बताया। भोपाल के रवींद्र भवन में आयोजित हुए कार्यक्रम में उन्होंने खेती, पशुधन, डेयरी और मत्स्य पालन सेक्टर में महिला किसानों की भूमिका और उनके योगदान को सम्मानपूर्वक रेखांकित किया।

श्री चौहान ने कहा कि महिलाओं के बिना खेती अधूरी है और केंद्र सरकार स्वयं सहायता समूहों और इंटीग्रेटेड फार्मिंग जैसी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के बिना खेती अधूरी है, क्योंकि भारतीय कृषि की जड़ें गांवों में हैं और वहां महिलाओं का परिश्रम हर खेत, हर फसल में दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाना केंद्र सरकार की प्राथमिकता है। मैंने इसे अपने जीवन का मिशन बना लिया है। श्री चौहान ने बताया कि बीज बोने, रोपाई, कटाई, फसल प्रबंधन और सब्जी उत्पादन जैसे कार्यों में महिलाओं की सक्रिय भूमिका भारतीय खेती की रीढ़ है। महिला किसान सिर्फ खेतों में काम नहीं करतीं, बल्कि वे परिवार और गांव की अर्थव्यवस्था की आधारशिला हैं। श्री चौहान ने बताया कि कृषि और ग्रामीण विकास विभाग द्वारा महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं, ताकि महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकें। उन्होंने इंटीग्रेटेड फार्मिंग (समेकित कृषि) मॉडल को अपनाने पर भी बल दिया, जिसमें किसान एक साथ कई गतिविधियां जैसे- फसल, बागवानी, पशुपालन, मत्स्यपालन आदि कर अपनी आय को कई गुना बढ़ा सकते हैं।

रिकॉर्ड प्रबंधन और स्वच्छता अभियान पर जोर

आईसीएआर डीजी ने की समीक्षा

नई दिल्ली। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक और कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. एम.एल. जाट ने विशेष अभियान 5.0 के अंतर्गत प्रमुख गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा करने के लिए कृषि भवन, नई दिल्ली स्थित आईसीएआर मुख्यालय के अभिलेख कक्ष और अन्य अनुभागों का दौरा किया। इस दौरान डॉ. जाट ने रिकॉर्ड प्रबंधन प्रणालियों को मजबूत करने, कुशल कार्यालय संचालन सुनिश्चित करने तथा स्वच्छता और सुशासन की भावना को कायम रखने के महत्व पर जोर दिया।

डॉ. जाट ने बताया कि इससे लंबित मामलों में कमी लाने, अभिलेखों के समय पर निराकरण एवं डिजिटलीकरण तथा प्रभावी स्वच्छता बनाए रखने में मदद मिलेगी। आईसीएआर के अपर महानिदेशक (समन्वय) डॉ. अनिल कुमार ने डॉ एम.एल.जाट को विशेष अभियान-5.0 की प्रगति, चुनौतियों और इससे जुड़ी अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

साप्ताहिक सुविचार

सच्चे साहित्य का निर्माण एकांत चिंतन और एकान्त साधन में होता है। – अनंत गोपाल शेवड़े

भावांतर योजना का मायाजाल

हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार ने सोयाबीन उत्पादक किसानों के लिये भावांतर योजना शुरू की है। योजना के मुताबिक सोयाबीन का भाव विभिन्न मंडियों में न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे होने पर भाव की अंतर राशि का भुगतान किसानो को सरकार करेगी। इस योजना को लेकर सरकार खुद आत्मविश्वास में नहीं है। इसकी झलक पिछली कैबिनेट बैठक में देखने को मिली। बैठक के दौरान कई मंत्रियों ने भावांतर योजना के सफल क्रियान्वयन में आने वाली अड़चनों के बारे में सीएम को बताया। इस योजना को लेकर सीएम अत्यधिक आश्वस्त दिखे।

कृषक दूत सम्पादकीय

उन्होंने सोयाबीन को कम भाव में खरीदने वाले व्यापारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने एवं नजर रखने का निर्देश दिया। यह काम इतना आसान नहीं है जितना सीएम साब समझ रहे हैं। प्रदेश की विभिन्न मंडियों में सोयाबीन के भाव अलग-अलग रहते हैं। ऐसी स्थिति में हर मंडी का मॉडल रेट निकालना फिर किसानों को अंतर की राशि देना समझ से परे है। जब व्यापारियों को पता है कि उनके द्वारा खरीदे गये सोयाबीन रेट के आधार पर सरकार भाव तय करेगी तब व्यापारी किसानों को अधिक दाम क्यों देंगे। मंडियों में खरीदे जाने वाले सोयाबीन को औने-पौने दाम में खरीदेंगे। हर मंडी के लिये मॉडल रेट भी सोयाबीन का निकालना कठिन कार्य है। किसानों के साथ सरकार खुलेआम सांप-सीढ़ी का खेल रच चुकी है। भावांतर योजना का पंजीयन करवाने से तो किसानों का पेट नही भरेगा। यदि सरकार किसानों को सहायता या समर्थन करना चाहती है तो सोयाबीन की खरीदी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर क्यों नहीं करती? एमएसपी फसलों की सरकार ने घोषित किया है। किसानों की उपज सही कीमत पर खरीदना सरकार का उत्तदायित्व है। एमएसपी पर सोयाबीन खरीद कर सरकार जिसे चाहे उसे बेचे। किसानों द्वारा लंबे समय से एमएसपी गारंटी कानून की मांग की जा रही है। अब समझ में आ रहा है कि सरकार एमएसपी गारंटी कानून क्यों नहीं ला रही? गारंटी कानून लागू होने के पश्चात फसलों की खरीदी सरकार की मजबूरी बन जायेगी। स्थिति चाहे जो भी हो सरकार का यह प्रयास होना चाहिये कि किसानों को सोयाबीन का उचित मूल्य मिले। सोयाबीन प्रदेश की आन, बान और शान है। देशभर में मध्यप्रदेश सोयाबीन उत्पादन में अग्रणी है। इसे बनाये रखने में सबकी भलाई है।

मछली पालन पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण

रायसेन। कृषि विज्ञान केंद्र रायसेन द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना अंतर्गत, राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद के सहयोग से कृषकों को पांच दिवसीय मछली पालन में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन के वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख डॉ. स्वप्निल दुबे, वैज्ञानिक डॉ. ब्रहमा नन्द शुक्ला, रंजीत सिंह राघव, डॉ. मुकुल कुमार, डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, लक्ष्मी चक्रवर्ती, आलोक सूर्यवंशी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण में डॉ. ब्रह्मानंद शुक्ला द्वारा प्रमुख जलीय खरपतवारों व उनके नियंत्रण, पालने योग्य प्रमुख प्रजातियों, मछलियों के प्रमुख रोग व उपचार आदि के बारे में तकनीकी जानकारी दी गयी। वैज्ञानिक आलोक कुमार सूर्यवंशी द्वारा मछली पालन में लगने वाली लागत व आमदनी के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी। डॉ. प्रकाश अम्बालकर, पूर्व वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल द्वारा नये तालाब निर्माण के लिए उपयुक्त मिट्टी व विधि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। मत्स्य विभाग के डॉ. सहदेव नागले, सहायक संचालक मत्स्य द्वारा मछलियों के संचय से पहले तालाब के प्रबंधन के बारे में तकनीकी जानकारी एवं केंद्र व राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान कृषकों को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन व वीडियो फिल्म के द्वारा भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के पंकज भार्गव व सुनील कैथवास का विशेष योगदान रहा।

पोषण माह समापन एवं विश्व खाद्य दिवस

बैतूल। कृषि विज्ञान केन्द्र बैतूल में विश्व खाद्य दिवस एवं पोषण माह का समापन कार्यक्रम का आयोजन किया है। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुधाकर पवार, भाजपा जिला अध्यक्ष बैतूल एवं सुरेश गायकवाड़ नगरपालिका उपाध्यक्ष बैतूल एवं संगीता पवार उपस्थित थे।

कार्यक्रम में सुधाकर पवार द्वारा विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर मोटे अनाज से निर्मित विभिन्न व्यंजनों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। उन्होंने प्राकृतिक कृषि एवं पोषक अनाजों को अपनाने का आग्रह किया है। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.के. तिवारी द्वारा पोषण को बढ़ाने के लिए बायोफोर्टिफाइड फसलों के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ. एम.पी. इंगले द्वारा मोटे अनाज का पोषण में महत्व के बारे में बताया। डॉ. मेघा तिवारी द्वारा पोषण अनाज उत्पादन में प्राकृतिक खेती के घटकों का उपयोग करने के बारे में बताया। संजय गहलवार, सहायक संचालक महिला एवं बाल विभाग, बैतूल द्वारा स्वास्थ्य सुधार के लिए संतुलित पोषण आहार के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में एन.एस. ठाकुर महिला एवं बाल विकास, डॉ. संजीव वर्मा एवं 70 सुपरवाइजर एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

प्राकृतिक खेती एवं कृषक प्रशिक्षण आयोजित

शहडोल। कृषि विज्ञान केंद्र शहडोल एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग शहडोल के संयुक्त तत्वाधान में ग्राम गिरिवा ब्लॉक बुढ़ार में प्राकृतिक खेती जागरूकता अभियान एवं कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. ब्रजकिशोर प्रजापति ने किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए बीजामृत, जीवामृत, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्निस्त्र, दशपर्णी की तैयारी और अनुप्रयोग के बारे में विस्तार से बताया। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी बुढ़ार शिशुपाल राजपूत ने कृषकों को जानकारी दी कि मिट्टी की शक्ति और उसकी स्थिति के बारे में हमें तभी जानकारी हो पाएगी, जब हम उसका समय-समय पर परीक्षण कराते रहे।

कृषकों के प्रक्षेत्र में लगी फसलों का किया निरीक्षण

रीवा। कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा के प्रमुख डॉ. ए.के. पांडेय के निर्देशन एवं अधिष्ठाता डॉ. एस.के. त्रिपाठी कृषि महाविद्यालय रीवा के मार्गदर्शन में केन्द्र के पौध सरंक्षण वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश कुमार द्वारा ग्राम उमरी के कृषकों के खेत (प्रक्षेत्र) में लगी प्रमुख फसलों चावल, अरहर, बैगन, मिर्च एवं टमाटर का निरीक्षण कर किसानों को सलाह दी। चावल (धान) में सफेद, हरी या भूरी मक्खी के साथ गंधी कीट का प्रकोप होने पर पाईमेट्रोजीन 50 डब्ल्यू.जी. की 320 ग्राम मात्रा या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल की 260 मिली मात्रा प्रति हेक्टेयर छिड़काव करने की सलाह दी।

अनमोल वचन

कमाई से दिये गये दान का फल अगले जन्म में मिलता है। – गुरुवाणी

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

कार्तिक कृष्ण/शुक्ल पक्ष विक्रम संवत 2082 ईस्वी सन् 2025

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
21 अक्टूबर 25	मंगलवार	कार्तिक कृष्ण-30	अमावस्या
22 अक्टूबर 25	बुधवार	कार्तिक शुक्ल-01	अन्नकूट
23 अक्टूबर 25	गुरुवार	कार्तिक शुक्ल-02	भाईदोज
24 अक्टूबर 25	शुक्रवार	कार्तिक शुक्ल-03	
25 अक्टूबर 25	शनिवार	कार्तिक शुक्ल-04	विनायकी चतुर्थी व्रत
26 अक्टूबर 25	रविवार	कार्तिक शुक्ल-05	
27 अक्टूबर 25	सोमवार	कार्तिक शुक्ल-06	
28 अक्टूबर 25	मंगलवार	कार्तिक शुक्ल-07	
29 अक्टूबर 25	बुधवार	कार्तिक शुक्ल-08	
30 अक्टूबर 25	गुरुवार	कार्तिक शुक्ल-09	पंचक 2.15 रात से
31 अक्टूबर 25	शुक्रवार	कार्तिक शुक्ल-10	पंचक
01 नवम्बर 25	शनिवार	कार्तिक शुक्ल-11	देव उठनी ग्यारस, पंचक
02 नवम्बर 25	रविवार	कार्तिक शुक्ल-12	पंचक
03 नवम्बर 25	सोमवार	कार्तिक शुक्ल-13	पंचक

किसानों को पौषक तत्व प्रबंधन के प्रति जागरूक करने वाली आरएमपीसीएल पहली कंपनी

महावीरा जिरोन पावर प्लस पौषक तत्व आपूर्ति का प्रमुख स्त्रोत

प्रोटीनयुक्त अनाज वर्तमान समय की मांग है। फसलों में पौषक तत्व प्रबंधन के माध्यम से प्रोटीनयुक्त अनाज बिना किसी अतिरिक्त लागत के पैदा किया जा सकता है। ऐसा ही अनोखा उर्वरक आरएमपीसीएल ने महावीरा जिरोन पावर प्लस के नाम से उपलब्ध करवाया है जो छः प्रमुख पौषक तत्वों फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम का अद्भुत मिश्रण है। यह उर्वरक जमीन की सेहत को भी दुरुस्त रखता है। साथ ही कम उत्पादन लागत में गुणवत्तायुक्त अनाज पैदा करने में सक्षम है।

इंदौर। मिट्टी की खराब होती सेहत और उससे उत्पादित हानिकारक अनाज भविष्य के लिये सबसे बड़ा खतरा है। जब तक जमीन को आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति नहीं होगी तब तक प्रोटीनयुक्त खाद्यान्न के बारे में सोचना दिवा स्वप्न जैसा होगा। देश के प्रत्येक किसान को पोषक तत्व प्रबंधन की तकनीक से अवगत कराने का यह सही समय है।

श्री विनीत जैन
मैनेजिंग डॉयरेक्टर
आरएमपीसीएल

श्रीमती साक्षी जैन
डायरेक्टर
(डिजिटल मार्केटिंग)
आरएमपीसीएल

उक्त उद्गार उर्वरक उद्योग की अग्रणी कंपनी आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनीत जैन एवं डायरेक्टर डिजिटल मार्केटिंग साक्षी जैन ने व्यक्त किया। श्री विनीत जैन ने बताया कि अमेरिका से मैकेनिकल इंजीनियरिंग करने के पश्चात नौकरी छोड़कर उन्होंने खेती-किसानी से जुड़े हुये उद्योग को चुना। आरएमपीसीएल के माध्यम से महावीरा जिरोन पावर प्लस उर्वरक किसानों को उपलब्ध कराकर मिट्टी को आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति करने का प्रयास किया जा रहा है।

श्री जैन ने बताया कि किसान सामान्यत: सभी फसलों में यूरिया एवं डीएपी का प्रयोग करते हैं। इस वजह से मिट्टी की सतह दिनों-दिन सख्त होती जा रही है। जमीन को उपजाऊ बनाने एवं पोषणयुक्त अनाज पैदा करने के लिये माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की अत्यंत आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि वैश्विक स्तर पर जहां माइक्रोन्यूट्रिएंट्स का उपयोग 4 किलोग्राम प्रति एकड़ है वहीं भारत में मात्र 800 ग्राम प्रति एकड़ उपयोग हो रहा है। पर्याप्त पोषक तत्व प्रबंधन के बिना प्रोटीनयुक्त अनाज पैदा नहीं हो सकता। आरएमपीसीएल द्वारा उत्पादित महावीरा जिरोन पावर प्लस छः पोषक तत्वों कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, जिंक, बोरोन और मैग्नीशियम का अद्भुत मिश्रण है। यह खाद सभी फसलों का उत्पादन बढ़ाने एवं जमीन की सेहत को बरकरार रखने में उपयोगी है। कंपनी महावीरा जिरोन पावर प्लस के माध्यम से देश के प्रत्येक किसान को पोषक तत्व प्रबंधन की तकनीक पहुंचाना चाहती है। महावीरा जिरोन पावर प्लस अकेला ऐसा उत्पाद है जो खेती की उत्पादन लागत को कम करके पोषण युक्त अनाज पैदा करने में सक्षम है।

श्री जैन ने बताया कि वे अभी भी प्रतिदिन 5-10 किसानों से मिलकर उनका फैडबैक लेते हैं। इस उत्पाद को बाजार में लाने के पहले किसानों से गहन चर्चा करके, कई मंडियों में जाकर कृषि उपज को देखकर, महावीरा जिरोन पावर प्लस को लांच किया है। कंपनी के अनुसंधान एवं विकास विभाग में रात-दिन एक करके इस उत्पाद को लांच किया ताकि उत्पादित अनाज की गुणवत्ता में सुधार हो सके। श्री जैन ने बताया कि महावीरा जिरोन पावर प्लस के उपयोग से उत्पादित अनाज बेहतर गुणवत्ता का रहता है साथ ही किसानों को बाजार भाव भी अधिक मिलता है। उन्होंने बताया कि विश्व में अनाज की उत्पादकता सबसे अधिक ब्राजील में है। भारत में असंतुलित उर्वरक उपयोग के कारण उत्पादन काफी कम हो रहा है। देश में कुछ जागरूक किसान तो अपनी फसलों में पोषक तत्व प्रबंधन पर ध्यान देते हैं लेकिन अधिकांश किसान इससे अनजान हैं। कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनीत जैन ने बताया कि हमारा उद्देश्य सिर्फ उत्पाद बेचना नहीं है बल्कि किसानों को सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपयोगिता से परिचित करवाना है। आरएमपीसीएल फसलों की बुवाई से लेकर कटाई तक किसानों को सही सलाह देने के प्रति कटिबद्ध है। महावीरा जिरोन पावर प्लस अकेला ऐसा उर्वरक है जो प्रोटीनयुक्त, गुणवत्ता से परिपूर्ण एवं 25 से 30 प्रतिशत अधिक उत्पादन देने में सक्षम है।

डिजिटल मार्केटिंग कृषि विकास का सशक्त माध्यम : साक्षी जैन

आरएमपीसीएल की डायरेक्टर डिजिटल मार्केटिंग साक्षी जैन ने इस मौके पर बताया कि वर्ष 2021 में कोविड के दौरान किसानों से संवाद करने के लिये डिजिटल प्लेटफार्म चुना। खेती-किसानी के बगैर किसी पारिवारिक पृष्ठभूमि के किसानों से सतत लगाव एवं निरंतरता रंग लायी जब देश के करोड़ों किसान आरएमपीसीएल के फेसबुक एवं इंस्ट्राग्राम के माध्यम से कंपनी से जुड़े। साक्षी जैन ने बताया कि दिन की शुरुआत किसानों से बात करके ही होती है। अब उन्हें खेती-किसानी एवं देश का किसान सबसे अच्छा लगता है। किसानों से निरंतर संवाद करके उनकी समस्याओं को जानकर समाधान करने में आनंद आता है। उन्होंने बताया कि महावीरा जिरोन पावर प्लस से उत्पादित अनाज पोषणयुक्त तो है ही साथ ही उसके फसल अवशेष जो पशुओं को खिलाये जाते हैं वह भी पोषणयुक्त हैं। दुधारू पशुओं के लिये कंपनी ने 'न्यूट्रीहर्ड' पशु आहार उपलब्ध करवाया है जो अत्यधिक पोषण देने वाला है। उन्होंने बताया कि इंदौर की एक गौ-शाला को पहला 'न्यूट्रीहर्ड' बैग दिया था जहां पर अब बिना इंजेक्शन के दूध निकाला जाता है। 'न्यूट्रीहर्ड' से देश के लाखों पशुपालक लाभ कमा रहे हैं। न्यूट्रीहर्ड से प्राप्त दूध शत-प्रतिशत शाकाहारी है। कंपनी डायरेक्टर डिजिटल मार्केटिंग साक्षी जैन ने बताया कि अधिक से अधिक किसानों तक पोषक तत्व प्रबंधन की जानकारी पहुंचाने के प्रति कंपनी संकल्पबद्ध है।

महावीरा जिरोन डीएपी की पहली रैक का इंदौर में पदार्पण

(व्यवसाय प्रतिनिधि)

इंदौर। उर्वरक उद्योग की प्रमुख कंपनी आरएमपीसीएल की पहली आयातित डीएपी (डाई अमोनियम फास्फेट) की रैक विगत दिनों इंदौर पहुंची। महावीरा जिरोन डीएपी की रैक इंदौर में पहुंचने पर कंपनी स्टाफ द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

इस मौके पर कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनीत जैन, श्री प्रमोद कुमार पांडेय सीनियर जीएम (हेड एग्रोनामिस्ट), श्री बलविन्दर सिंह (सीएफओ), श्री नीरज शर्मा सीनियर जीएम (सेल्स), श्री विकास सहायक प्रबंधक (सेल्स) एवं कंपनी की विपणन टीम उपस्थित रही।

कंपनी की इंदौर पहुंची पहली डीएपी की रैक को लेकर कंपनी की संपूर्ण टीम एवं विक्रेताओं में भारी खुशी देखी गयी। महावीरा जिरोन डीएपी रैक से अनलोड होते ही सारी खाद तुरंत डिस्पैच कर दी गई।

यह खाद मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र के किसानों को दी गई है। उल्लेखनीय है कि आरएमपीसीएल ने इस वर्ष किसानों को महावीरा जिरोन आयातित डीएपी उपलब्ध करवाया है।

- **श्री सुनील केथवास,** प्रक्षेत्र प्रबंधक
- **रंजीत सिंह राघव,** वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान)
- **डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी,** वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
- **डॉ. स्वप्निल दुबे,** वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख

कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)

रबी फसलों की उन्नतशील किस्मों का चयन करें

फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषक अपनी कम से कम उपलब्ध भूमि में अधिक से अधिक उत्पादन लेना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि फसल व किस्मों का चुनाव भूमि के अनुरूप, जलवायु, मौसम एवं अन्य उपलब्ध संसाधनों के आधार पर करना चाहिए।

फसलों की किस्मों का चुनाव करते समय भूमि का प्रकार, क्षेत्र विशेष की जलवायु, बुवाई का समय, पानी की उपलब्धता, क्षेत्र विषेष में कीट व्याधि व रोग का प्रकोप व आगामी मौसम में बोये जाने वाली प्रस्तावित फसलों के आधार पर करना चाहिए। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, क्षेत्रीय गेहूं अनुसंधान केन्द्र, इन्दौर के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की सिंचित, असिंचित, जल्दी, मध्यम, देर से पकने वाली प्रजाति विकसित की गयी हैं। उन्नतशील प्रजातियों का चयन करके कृषक 15-20 प्रतिशत तक उत्पादन में वृद्धि कर सकते

चंदौसी/चपाती गेहूं की किस्में

किस्म	पकने की अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
एच.आई.-1605 (पूसा उजाला)	115-120	35-40
एच.आई.-1650 (पूसा ओजस्वी)	115-120	50-55
एच.आई.-1655 (पूसा हर्षा)	115-120	40-45
एच.आई.-1633 (पूसा वाणी)	100-105	40-45
जी.डब्ल्यू.-513	110-120	55-60
जी.डब्ल्यू.-547	110-115	60-65
एच.आई.-1634 (पूसा अहिल्या)	110-115	48-50
एच.आई.-1636 (पूसा बकुला)	120-122	50-60
डी.बी.डब्ल्यू.-303 (करण बैष्णवी)	120-125	70-75
डी.बी.डब्ल्यू.-187 (करण वंदना)	120-125	70-75

कठिया/ड्यूरम गेहूं की किस्में

किस्म	पकने की अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
एच.आई.-8830 (पूसा कीर्ति)	115-118	40-45
एच.आई.-8663 (पोषण)	120-125	50-60
एच.आई.-8713 (पूसा मंगल)	120-125	50-60
एच.आई.-8737 (पूसा अनमोल)	120-125	50-60
एच.आई.-8759 (पूसा तेजस)	120-125	65-70
एच.आई.-8823 (पूसा प्रभात)	120-125	65-70

चने की उन्नतशील किस्में

प्रजाति	अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
पूसा मानव	108-110	38-40
पूसा पार्वती	110-113	20-25
आई.पी.सी. 2006-77	110-112	20-22
जे.जी.-12	110-120	20-22
जे.जी.-18	115-120	20-25
जे.जी.-24	115-120	20-22
जे.जी.-36	115-120	20-22
जे.जी.-52	115-120	18-22
जे.जी.-63	110-120	20-22
आर.व्ही.जी.-201	95-110	20-22
आर.व्ही.जी.-202	100-105	18-20
आर.व्ही.जी.-203	100-105	18-20
आर.व्ही.जी.-204	110-112	18-20

मसूर की उन्नतशील किस्में

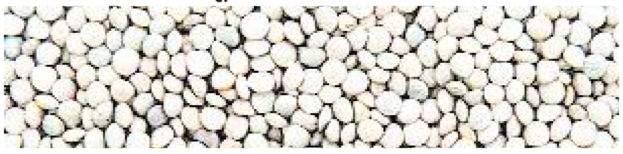

प्रजाति	अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
आई.पी.एल.-316	110-115	14-15
आई.पी.एल.-319	110-115	15-17
आई.पी.एल.-534	100-107	14-16
आर.व्ही.एल.-30	105-110	14-15
आर.व्ही.एल. 13-5	103-109	12-14
आर.व्ही.एल. 13-7	99-103	14-15
आर.व्ही.एल.-31	105-110	14-15
एल.-4727	92-118	11-15
एल.-4717	96-106	12-13
एल.-4729	96-110	17-18
कोटा मसूर-1	98-107	10-14
कोटा मसूर-2	97-104	12-15

सरसों की उन्नतशील किस्में

प्रजाति	अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
गिरिराज	137-153	22-27
आर.एच.-749	135-140	26-28
आर.एच.-725	135-140	25-26
आर.एच.-761	137-143	26-27
डी.आर.एम.आर.1165-40	135-151	22-26
डी.आर.एम.आर. 150-35	135-140	18-20

अलसी की उन्नतशील प्रजातियां

उन्नत प्रजाति	अनुमोदित वर्ष	उपज (क्विं/हे.)
जवाहर अलसी- 67	2010	12-13
जवाहर अलसी- 73	2011	10-11
जवाहर अलसी- 41	2013	16-17
जवाहर अलसी- 79	2016	17-18
जवाहर अलसी- 66	2018	12-14
जवाहर अलसी- 95	2018	10-12
आर.सी.एल.-148	2018	13-14
जवाहर अलसी- 93	2019	10-11

रबी फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों के प्रबंधन की सलाह

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार, डॉ. आर.के. प्रजापति एवं डॉ. एस.के. जाटव वैज्ञानिक द्वारा किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों की जानकारी दी जा रही है। रबी की प्रमुख फसलें गेहूं की अगेती किस्में 20 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक 1-2 सिंचाई के लिए उपयुक्त शरबती किस्में एच.आई.-153 (हर्षिता), एच.डी. 2987 (पूजा बहार), एच.आई. 1605 (पूसा उजाला), जे.डब्ल्यू. 3211. जे.डब्ल्यू. 3269, एम.पी. 3288, डी.बी.डब्ल्यू. 110 और कठिया अगेती किस्में एच.आई. 8777, एच.आई. 8802, एच.आई. 8823 (पूसा प्रभात) और समय से 10 नवम्बर से 25 नवम्बर तक बुवाई के लिए जे.डब्ल्यू. 1201, जी.डब्ल्यू. 273, जी.डब्ल्यू. 322, जी.डब्ल्यू. 366, एच.आई. 1544 (पूर्णा), एच.आई. 1636 (पूसा वकुला), एच.आई. 1650, क्ठॅ 303 (करण वैष्णवी) और कठिया की किस्में एम.पी.ओ. 1255, एच.आई. 8663 (पोषण), एच.आई. 8713 (पूसा मंगल) एच.आई. 8737 (पूसा अनमोल), एच.आई. 8759 (पूसा तेजस) और गेहूं की पछेती शरबती किस्में जिन्हें दिसम्बर से जनवरी तक बुवाई करने हेतु जे.डब्ल्यू. 1202, जे.डब्ल्यू. 1203, एम.पी. 3336, राज 4238, एच.डी. 2932 (पूसा-11), एच.आई. 1634 (पूसा अहिल्या) आदि किस्मों का भूमि एवं सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर गेहूं की किस्मों का चयन करें। चना की उन्नत किस्में जे.जी. 12, आर.वी.जी. 202, आर.वी.जी. 201, जे.जी. 36 एवं मसूर की उन्नत किस्में आई.पी.एल. 316, एल. 4727, आर.वी.एल. 31, कोटा मसूर 2, दाल वाली सफेद मटर की नई किस्में आई.पी.एफ.डी. 11-5, आई.पी.एफ.डी. 12-2, दाल वाली हरी मटर की नई किस्में आई.पी.एफ.डी. 10-12, आई.पी.एफ.डी. 2014-2, आई.पी.एफ.डी. 1-19, पन्त मटर 243 तथा सरसों की नई किस्में राधिका, गिरिराज, एच.आर. 406, आर.एच. 749, आर.एच. 725, पी.एम. 30, अलसी की नई किस्में जे.एल.एस. 95, जवाहर अलसी 66, जवाहर अलसी 79, जौ की नई किस्में डी.डब्ल्यू.आर.बी. 137, आर.डी. 2715, आर.डी. 2552 आदि किस्मों का भूमि के रकबा के अनुसार बीज की व्यवस्था कर ली जाए। बीज की उपलब्धता हेतु चना और मटर की नई किस्मों के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ और प्रक्षेत्र प्रभारी, कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़, कार्यालय संचालक प्रक्षेत्र, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर से संपर्क किया जा सकता है।

फूल गोभी की उन्नत खेती

● डॉ. एस.के. त्यागी
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, खरगोन (म.प्र.)

शरदकालीन सब्जियों में फूलगोभी का प्रमुख स्थान है। यह एक स्वादिष्ट तथा लोक-प्रिय सब्जी है। फूलगोभी से सब्जी, अचार और पकोड़े बनाये जाते हैं फूलगोभी में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, विटामि ''ए'' तथा ''सी'' पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

जलवाय – फूलगोभी के लिए ठण्डी और आर्द्र जलवायु की आवष्यकता होती है। फूल तैयार होने के समय तापमान अधिक होने पर फूल छितरे, पत्तेदार और पीले रंग के हो जाते हैं।

मृदा– फूलगोभी की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है, किन्तु गहरी दोमट मृदा जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो इसकी खेती के लिए अच्छी होती है।

उन्नत किस्में

पूसा अगेती– यह शीघ्र तैयार होने वाली (90-100) किस्म है। मई-जून में बीज बोए जाते हैं और सितम्बर-अक्टूबर में फूल कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रति हेक्टेयर लगभग 80-100 क्विंटल तक पैदावार मिल जाती है।

पूसा दीपाली– यह भी शीघ्र तैयार होने वाली (100 दिन) किस्म हैं। फूल मध्यम आकार के सफेद तथा ठोस होते हैं। जो कि मध्य अक्टूबर से कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रति हेक्टेयर 100 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पूसा स्नोबॉल-1- यह संकरण द्वारा विकसित किस्म हैं फूल सफेद, ठोस और मध्यम आकार के होते हैं। पिछेती किस्म होने के कारण इसे उत्तरी भारत में अक्टूबर के अन्त से नवम्बर के अन्त तक रोपाई की जा सकती है। इस किस्म से 150-200 क्विंटल उत्पादन प्रति हेक्टेयर मिल जाता है।

पूसा स्नोबॉल-2- इस किस्म को चयन द्वारा विकसित किया गया है। फूल सफेद एवं ठोस होता है। फूलों की भण्डारण क्षमता अधिक होती है। यह किस्म अक्टूबर के अन्त से नवम्बर के मध्य तक रोपाई के लिए उपयुक्त है। प्रति हेक्टेयर 150-200 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पूसा स्नोबॉल के-1- इस किस्म का विकास भी चयन द्वारा किया गया है। फूल सफेद, ठोस और उत्तम भण्डारण क्षमता वाले होते हैं। इस किस्म की रोपाई अक्टूबर क अन्त से नवम्बर के मध्य तक की जाती है। यह किस्म ब्लैक रॉट नामक रोग के लिए प्रतिरोधी है। इस किस्म से 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जाती है।

खाद एवं उर्वरक – फूल गोभी की अधिक पैदावार लेने के लिए खाद और उर्वरक दोनों का समुचित मात्रा में और सही समय पर इस्तेमाल करना नितान्त आवश्यक है। गोबर की खाद 250 क्विंटल, नत्रजन 100 किलो, स्फुर 75 किलो तथा पोटाश 40 किलो प्रति हैक्टेयर आवश्यक होता है। गोबर की खाद खेत तैयार करते समय स्फुर तथा पोटाश पौध रोपण के पहले तथा नाइट्रोजन दो भागों में क्रमश: रोपाई के 10-15 दिन तथा 25-30 दिन बाद देना चाहिए।

बीज की मात्रा- एक हेक्टेयर के लिए 650-750 ग्राम बीज पर्याप्त होता है।

पौध तैयार करना- उचित आकार की सामान्यतया 21 मीटर आकार की 10-15 सेमी ऊंची क्यारी बनाकर बीज कतारों में बोना चाहिए। पौधे क्यारियों में जब 4-6 सप्ताह हो जायें तब खेत में लगाना चाहिए।

रोपाई- रोपाई की दूरी भूमि की उर्वरता तथा मौसम के ऊपर निर्भर करती है। शीघ्र तैयार होने वाली किस्मों को कतार से कतार 45 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी तथा मध्यम एवं देर से तैयार होने वाली किस्मों के लिए कतार से कतार 60 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी रखनी चाहिए।

सिंचाई- पौध रोपने के तुरंत बाद सिंचाई करें। सामान्यत: 10-15 दिन के अन्तर से सिंचाई करना चाहिए।

निराई-गुड़ाई- फूलगोभी की फसल के साथ उगे खरपतवारों की रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करते रहे, अधिक गहरी गुड़ाई न करें।

ब्लांचिंग- फूल का रंग आकर्शक सफेद बनाने के लिए, पौधे की चारों ओर फैली हुई पत्तियों को फूल के ऊपर समेटकर बांध देने को ब्लांचिग कहते हैं। यह क्रिया फूल तैयार होने के 8-10 दिन पूर्व की जानी चाहिए।

कटाई- जब फल पूर्ण रुप से विकसित हो जाय तब काट लेना चाहिए। काटते समय यह ध्यान रखें कि फूल में खरोंच या रगड़ न लगने पायें।

उपज- एक हेक्टेयर से 200-250 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पौध संरक्षण

कीट नियंत्रण

कैबेज बोरर- यह इल्ली पत्तियों में छेद कर खा जाती है। जिसके कारण पौधे सूख जाते हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए इण्डोसल्फान की 2 मिली लीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घेलकर छिड़काव करें।

माहो – यह कीट पत्तियों और पौधे के अन्य कोमल भागों का रस चूसता है, जिसके कारण पत्तियां पीली पड़ जाती है। इस कीट के नियंत्रण क लिए डायमिथेएट 30 ई.सी. की 2 मिलीलीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मैगट पौधे के मध्य भाग को खाते हैं। जिससे तने का आन्तरिक भाग सड़ जाता है। तना खोखला हो जाता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए ट्रायजोफास 40 ईसी की 2 मिली लीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

डायमण्ड ब्लेक माथ- यह कीट पत्तियों को खाता है तथा पत्तियों में ही अण्डे देती है। इस कीट के पंख हीरे के समान होते हैं इस कीट के नियंत्रण के लिए मैलाथियान 50 ईसी की 2 मिलीलीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रोग एवं उनकी रोकथाम

आर्द्रगलन – इस रोग में पौधशाला में पौधों का तना नीचे से गल जाता है। इस रोग की रोकथाम के लिए 0.1 प्रतिशत फाइटोलान से भूमि उपचार करें।

काला विगलन- इस रोग में रोगी पौधों की पत्तियों पर अंग्रेजी के वी आकार के भूरे या पीले रंग के धब्बे स्पष्ट दिखाई देते हैं। डंठल या जड़ के भीतरी भाग काले पड़ जाते हैं। पत्ते धीरे-धीरे पीले पड़कर सूख जाते हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए बीज को 50 सेल्सियस गर्म पानी में 30 मिनट तक डुबोयें तथा बीज को बाविस्टीन 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

बटनिंग या बोल्टिंग- इसमें फूलों के पकने से पूर्व ही फूल छोटे रहकर फटने लगते हैं और पौधों का विकास भी सामान्य नहीं होता है। अगेती जातियों को देर से बोने पर यह समस्या आती है। अत: विभिन्न किस्मों की नर्सरी में समय से बुवाई व खेत में रोपाई करें।

व्हिप टेल- अम्लीय भूमि में पौधों को मोलीब्डिनम पर्याप्त न मिलने के कारण पत्र-दल का उचित विकास न होकर केवल मध्य सिरा का ही विकास होता है। इसके नियंत्रण के लिए भूमि में एक किलोग्राम अमोनियम मोलीब्डेट प्रति हेक्टेयर की दर से मिलायें।

नोट- सभी प्रकार के कीटों के प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में नीम तेल 5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन अंतर्गत प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

नर्मदापुरम। कृषि विज्ञान केंद्र गोविन्दनगर, नर्मदापुरम द्वारा संकुल अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन- तिलहन, राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन वर्ष 2025-26 के अंतर्गत सिवनी मालवा ब्लॉक के ग्राम जीरावेह में प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में किसानों को सोयाबीन की वैज्ञानिक खेती के बारे में विषय विशेषज्ञों द्वारा जानकारी एवं प्रदर्शन की गयी तकनीक उन्नत किस्म, आईपीएम, मृदा परीक्षण, उसका महत्व एवं उपयोग पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में परियोजना के नोडल अधिकारी ब्रजेश कुमार नामदेव द्वारा किसानों को परियोजना की विस्तृत जानकारी दी एवं किसानों का फीडबैक लिया। वैज्ञानिक राजेन्द्र पटेल द्वारा सोयाबीन का बीज उत्पादन कटाई, रखरखाव के बारे में जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में उन्नत तकनीकी प्रदर्शन हेतु 125 किसानों का चयन किया गया था एवं आदान सामग्री में बीज बीज उपचार हेतु ट्राईकोडर्मा, पी.एस.बी. (स्फुर घोलक जीवाणु) कल्चर, बायो एकेंट- ट्राईकोकार्ड के साथ आईपीएम एवं आईएनएम तकनीकी का प्रदर्शन कर किसानों को नवीनतम तकनीक से अवगत कराया।

प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम में लगभग 100 किसानों के साथ गांव के सरपंच चन्द्रशेखर रघुवंशी, कृषि वैज्ञानिक, तिलहन तकनीकी सहायक मोहित पटेल, रावे छात्र नरेंद्र व ऋतिक पाल ने सहभागिता की एवं कार्यक्रम को सफल बनाया।

● डॉ. राजाराम त्रिपाठी
(ग्रामीण अर्थव्यवस्था विशेषज्ञ तथा अखिल भारतीय किसान महासंघ के राष्ट्रीय संयोजक)

जैविक प्रमाणन का मकड़जाल

किसानों के भरोसे पर व्यापार का ताला

भारत में जैविक शब्द अब उतना ही संदिग्ध हो चला है जितना सरकारी फाइलों में प्राथमिकता, जो दिखती तो है, पर पहुँचती कभी नहीं, कहीं नहीं। किसानों की मेहनत से पैदा हुई ईमानदारी, अब प्रमाणन एजेंसियों की चालाकियों के जाल में उलझ कर रह गई है।

हाल में एपीडा ने देशभर की 18 जैविक प्रमाणन एजेंसियों पर शिकंजा कसा, जिनमें मार्च 2025 में 12 और सितंबर 2025 में 6 एजेंसियों पर कार्रवाई की गई। इन पर आरोप था कि इन्होंने बिना आवश्यक निरीक्षण और साक्ष्य के किसानों के उत्पादों को ऑर्गेनिक घोषित कर दिया, कई बार तो किसान खुद यह सुनकर चौंक गए कि वे अब यकायक 'प्रमाणित जैविक उत्पादक' हैं।

विडंबना यह कि जिन संस्थाओं को किसानों का हितैषी माना गया, जिनमें कुछ राज्य सरकारों द्वारा संचालित थीं, वही अब अनियमितता में लिप्त पाई गईं। मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, तमिलनाडु, तेलंगाना जैसी जगहों पर प्रमाणन एजेंसियों ने कागजी जैविकता का खेल खेला और किसानों की मेहनत की कमाई को दांव पर लगा दिया।

ट्रेसनेट नहीं, ट्रेडर्स-नेट है असल नाम

एपीडा ने जिस डिजिटल प्रणाली TraceNet को किसानों की पारदर्शिता के लिए बनाया था, वह अब दलालनुमा व्यापारियों, बिचौलियों का उपकरण बन चुका है> इस प्लेटफ़ॉर्म पर किसान नहीं, बल्कि दलाल और निर्यातक खेलते हैं और किसान वहीं खड़ा रह जाता है जहाँ से उसने शुरुआत की थी।

मैंने कई बार कहा है कि TraceNet दरअसल Traders-Net है एक ऐसा नेटवर्क है जहां सर्टिफिकेट वही प्राप्त करता है जिसके पास तकनीकी दक्षता और जुगाड़ की क्षमता है, न कि खेत में पसीना बहाने वाला किसान।

मां दंतेश्वरी हर्बल समूह: वह बस्तर से उठी आवाज़ जिसने दुनिया को दिखाया रास्ता

यह भी स्मरणीय है कि जब देश में ऑर्गेनिक शब्द का उच्चारण भी मुश्किल था, तब बस्तर की धरती पर मां दंतेश्वरी हर्बल समूह ने वह इतिहास रचा जो आज भी भारत के जैविक आंदोलन की नींव है। 25 वर्ष पहले, जब न तो एपीडा के TraceNet का नाम था, न डिजिटल फॉर्मेट का, तब हमने जर्मनी की प्रतिष्ठित ECOCERT संस्था से अंतरराष्ट्रीय ऑर्गेनिक प्रमाणन प्राप्त किया था। देश का पहला सर्टिफाइड ऑर्गेनिक हर्बल कृषक ग्रुप बनने का गौरव बस्तर ने ही पाया। हमने जड़ी-बूटियों, औषधीय पौधों और मसालों की खेती में उस दौर में अंतरराष्ट्रीय मानक स्थापित किए, जब आज की कई एजेंसियाँ बनी ही नहीं थीं। आज जब ये प्रमाणन महारथी अपने लाइसेंस बचाने में व्यस्त हैं, तब यह याद दिलाना जरूरी है कि भारत के किसान को भरोसा सरकारी सील से नहीं, बल्कि धरती की निष्ठा से मिला था।

- एपीडा ने 2025 में दो चरणों में कुल 18 जैविक प्रमाणन एजेंसियों पर कार्रवाई की इनमें कई राज्य सरकार संचालित संस्थाएं भी शामिल थीं।
- मां दंतेश्वरी हर्बल समूह, बस्तर, देश का पहला सर्टिफाइड ऑर्गेनिक हर्बल ग्रोवर समूह है, जिसने जर्मनी की ECOCERT संस्था से 25 वर्ष पहले प्रमाणन प्राप्त किया।
- छत्तीसगढ़ के 2024-25 बजट में जैविक खेती के प्रोत्साहन के लिए मात्र रुपये 20 करोड़, जबकि प्रमाणीकरण हेतु रुपये 24 करोड़ का प्रावधान, यानी घोड़े से ज्यादा चाबुक की कीमत!
- Bureau Veritas विश्व की अग्रणी व सबसे भारी भरकम अमेरिकी प्रमाणन एजेंसी के खिलाफ 'मां दंतेश्वरी हर्बल समूह' की ऐतिहासिक लड़ाई में यह एजेंसी सरासर दोषी पाई गई थी और अंत में अधिकतम रुपये 2 लाख का जुर्माना मुआवजे के रूप में एपीडा ने निर्धारित किया पर भुगतान आज तक लंबित।

ब्यूरो वेरिटास मामला: जब सच्चाई ने अंतरराष्ट्रीय दबाव को मात दी

सालों पहले, हम बस्तरिया जैविक किसानों की संस्था मां दंतेश्वरी हर्बल समूह ने अमेरिका की प्रतिष्ठित प्रमाणन एजेंसी ब्यूरो वेरिटास के खिलाफ लंबी कानूनी लड़ाई लड़ी थी। यही वह एजेंसी है जो वाइट हाउस, अमेरिका के राष्ट्रपति भवन की गुणवत्ता प्रणालियों तक का प्रमाणन करती रही है। लेकिन जब इस वैश्विक ईमानदारी के सर्वोच्च प्रतीक ने हम किसानों के साथ छल किया तो हमने हार नहीं मानी। लंबी कानूनी प्रक्रिया के बाद एपीडा को ब्यूरो वेरिटास को दोषी मानना पड़ा और रुपये 2 लाख का जुर्माना भरने का आदेश देना पड़ा।

यद्यपि अमेरिकी दादागीरी दिखाकर उन्होंने अब तक भुगतान नहीं किया, पर भारत के किसान की सच्चाई अदालत में प्रमाणित हो चुकी थी। यह हमारी और भारत की जैविक प्रतिष्ठा के लिए एक ऐतिहासिक विजय थी, क्योंकि यह लड़ाई केवल एक संस्था की नहीं, बल्कि एक राष्ट्र के आत्मसम्मान की थी।

जब नीति खुद विरोधाभास बन जाए

अब जरा सरकारी नीतियों की विडंबना देखिए। छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में जहाँ जैविक खेती को प्रोत्साहन देने की बात की जाती है, वहां कुल 20 करोड़ रुपये का प्रावधान जैविक खेती के लिए और 24 करोड़ रुपये सिर्फ प्रमाणन के लिए रखा गया।

यह ऐसा ही है जैसे घोड़े से ज्यादा चाबुक की कीमत देना। किसान खेत में मेहनत करे और अफसर इन ठग प्रमाणीकरण संस्थाओं के साथ गठजोड़ कर जैविक प्रमाणीकरण के नाम पर सारा बजट चाट जाएँ। यह गोरखधंधा कितने सालों से चल रहा है क्या इसकी जांच नहीं की जानी चाहिए?

क्या सरकार को यह समझ नहीं कि जैविक प्रमाणीकरण तब सार्थक होगा जब किसान के पास जैविक उत्पादन का पर्याप्त साधन और समुचित समर्थन होगा? किसान को बिना प्रशिक्षण, बिना बाजार समर्थन, बिना उचित मूल्य गारंटी के केवल प्रमाणपत्र का बोझ देना, एक प्रकार का प्रशासनिक व्यंग्य है।

किसानों के साथ, या उनके सिर पर?

भारत में आज लगभग 37 मान्यता प्राप्त प्रमाणन एजेंसियां काम कर रही हैं, जिनमें 14 राज्य सरकारों के अधीन हैं। (**स्रोत-एनपीओपी मान्यता सूची, 2024**) लेकिन किसान तक पहुँचने वाला लाभ या सुविधा नगण्य है। किसान आज भी वही पुराना सवाल पूछ रहा है मुझे प्रमाणन नहीं, सम्मान चाहिए। मेरे उत्पादन का समुचित भुगतान चाहिए। और यही कारण है कि जब विदेशी बाजारों में इंडियन ऑर्गेनिक उत्पाद घटिया पाए जाते हैं, तो साख सिर्फ एपीडा की नहीं गिरती देश के हर ईमानदार किसान की आत्मा को ठेस पहुँचती है।

यह केवल आर्थिक नहीं, नैतिक अपराध है, क्योंकि यह जैविकता के नाम पर जैविक छल है और जब यह छल हमारे किसानों की छवि और देश की विश्वसनीयता दोनों को धूमिल करता है, तब यह कृषि-देशद्रोह की श्रेणी से कम नहीं ठहराया जा सकता।

अब कार्रवाई नहीं, जवाबदेही चाहिए

एपीडा द्वारा एजेंसियों के लाइसेंस रद्द करना पहली सीढ़ी है, मंजिल नहीं। अब जरूरी है कि इनसे जुड़े अधिकारियों, निर्यातकों, और दलालों की पिछले दस वर्षों की गतिविधियों का गहन, सूक्ष्म फोरेंसिक ऑडिट कराया जाए। जो एजेंसियाँ दोषी पाई गईं, उनकी मान्यता तो रद्द हो, पर साथ ही उन्होंने किसानों को जो आर्थिक क्षति पहुँचाई, उसका समुचित मुआवजा भी सुनिश्चित हो और सबसे बढ़कर, किसानों को इस व्यवस्था के दर्शक नहीं, भागीदार बनाया जाए। उनके अधिकारों और शिकायतों के लिए एक स्वतंत्र ऑर्गेनिक किसान आयोग बने, जहाँ किसान की आवाज़ प्रमाणीकरण की मुहर से ऊपर सुनी जाए। हमें जैविक का अर्थ फिर से जैविक बनाना होगा। आज वक्त आ गया है कि जैविक को केवल निर्यात का लेबल नहीं, बल्कि धरती से जुड़ा आंदोलन बनाया जाए। किसान का पक्ष ही राष्ट्र का पक्ष है।

जब तक प्रमाणन का नियंत्रण व्यापारियों और बिचौलियों के हाथ में रहेगा, तब तक भारत के खेत जैविक नहीं, बल्कि कागजी ही रहेंगे। बस्तर की मिट्टी से उठे मां दंतेश्वरी हर्बल समूह जैसे उदाहरण दिखाते हैं कि किसान स्वयं ईमानदारी और गुणवत्ता की परिभाषा तय कर सकता है, बिना किसी दलाल और जाल के। आज आवश्यकता है कि सरकार और समाज दोनों उस सच्चाई को पहचाने कि भारत का जैविक भविष्य किसी एजेंसी की मुहर से नहीं, बल्कि किसान के चरित्र से तय होगा। और जब तक यह नहीं होगा, तब तक यह पूरी व्यवस्था प्रमाणन नहीं, एक संगठित भ्रम-व्यवसाय बनी रहेगी।

उत्तम चौघड़िया-अमृत, शुभ, लाभ तथा चर है। खराब चौघड़िया- उद्वेग, रोग व काल है।

दिन की चौघड़ियाँ							समय	रात की चौघड़ियाँ						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	दिन-रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

ओसवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज (अन्नदाता)
धनतेरस एवं दीपावली
OGI
OSTWAL
अन्नदाता
अन्नदाता का साथ
किसान का विकास
कम खर्चा ज्यादा मुनाफा
ओसवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज
रजिस्टर्ड ऑफिस: 5-O-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा

की ओर से कृषक दूत के सभी पाठकों को
की हार्दिक शुभकामनाएं
कृषक दूत
प्रादेशिक कार्यालय 127 रचना नगर, भोपाल (म.प्र.) 0755-4061213, मो.: 9425326436

शुभ लाभ

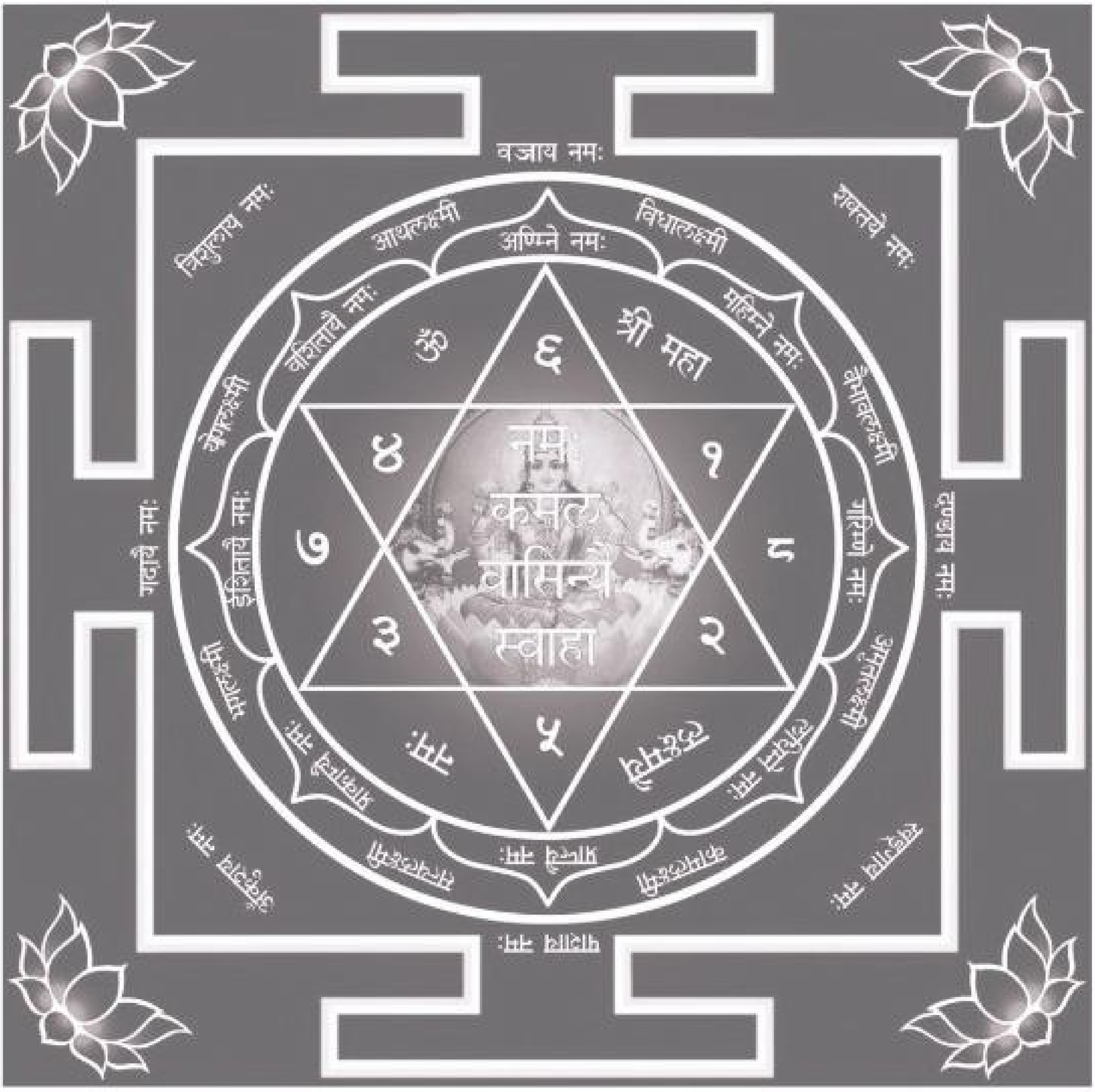
वज्राय नमः
त्रिशूलाय नमः
शक्तये नमः
आद्यलक्ष्मी
अग्निये नमः
विद्यालक्ष्मी
वशितायै नमः
महिम्ने नमः
ॐ
श्री महा
नमः
कमल
वासिन्ये
स्वाहा
गदायै नमः
६
४
१
७
८
३
२
५

शुभ लाभ

विधि विधान से करें लक्ष्मी पूजन

आसन पर लक्ष्मी-गणेश को रखें। देवी के आगे सिक्के, गल्ला, बही खाते, नया खाता रखें। देवी को सूखा धनिया, गुड़, बताशे, चावल (लावा) का भोग शुभ माना जाता है। लक्ष्मी के साथ सरस्वती और कुबेर भी होते हैं।

पूजन विधि : अपने ऊपर, आसन और पूजन सामग्री पर 3-3 बार कुशा या पुष्पादि से छिड़काव कर यह शुद्धिकरण मंत्र पढ़ें-

ॐ अपवित्र: पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतर शुचि:।।

यह मंत्र पढ़ते हुये आचमन करें और हाथ धोएं...

ॐ केशवाय नम:, ॐ माधवाय नम:, ॐ नारायणाय नम:

पुन: आसन शुद्धि मंत्र बोलें-

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

अनामिका अंगुली से चंदन/रोली लगाते हुये यह मंत्र पढ़ें-

चन्दनस्य महात्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्,
आपदां हस्ते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठतु सर्वदा।

कलश पूजा

कलश में सिक्का, सुपारी, दुर्वा, अक्षत, तुलसी पत्र और जल भरकर कलश पर आम पल्लव रखें। नारियल पर वस्त्र लपेटकर कलश पर रखें।

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर वरुण देवता का आह्वान मंत्र पढ़ें-

आगच्छ भगवान देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजा समप्ती तावत्वं सुस्थीरो भव।।

श्री गणेश पूजा

पहले गणेश जी की पूजा इस मंत्र से करें।
गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारूभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

हाथ में अक्षत लेकर आवाहन मंत्र का जाप करें

ॐ गणपतये इहागच्छ इह तिष्ठ।।

अक्षत पात्र में अक्षत छोड़ें। गणेश जी को प्रसाद चढ़ायें। पान सुपारी, फूल अर्पित करें। कलश पूजन के बाद सभी कुबेर, इंद्र सहित सभी देवी-देवताओं का स्मरण करें।

मां लक्ष्मी का ध्यान करें और मूल मंत्र पढ़ें-

लक्ष्मी पूजन विधि मंत्र

ॐ श्री महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नै च धीमती तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ॐ।।

अब हाथ में अक्षत लेकर बोलें

ॐ भूर्भुव: स्व: महालक्ष्मी, इहागच्छ इह तिष्ठ, एतानि पाद्याद्याचमनीय-स्नानीयं, पुनराचमनीयम्।

स्नान करायें और वस्त्र अर्पित करें

प्रतिष्ठा के बाद स्नान करायें, चंदन लगायें। पुष्प चढ़ायें और माला पहनायें। दूध, शक्कर और सूखे मेवों का भोग लगायें। इदं रक्त वस्त्र समर्पयामि कहकर लाल वस्त्र पहनायें। फिर मां लक्ष्मी को प्रसाद अर्पित करें। पान, सुपारी चढ़ायें। मां लक्ष्मी श्रीसूक्त के 16 मंत्रों का पाठ करें।

मां सरस्वती का ध्यान करें और यह मूल मंत्र पढ़ें-

ॐ ब्रह्म पत्नीच विद्महे महावाण्यैच
धीमती तन्न: सरस्वती प्रचोदयात।।

फिर पुष्प अर्पित करते हुये मंत्र पढ़ें-

ॐ महालक्ष्मयै नम:

लक्ष्मी पूजन के बाद भगवान विष्णु का ध्यान करें।
ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च,
जगदिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नम:।
अब पूजन के बाद क्षमा प्रार्थना और आरती करें।
आवाहनं न जानामि, न जानामि तबार्चनम।
पूजं चैव न जानामि, क्षम्यताम् परमेश्वरं।।

दीपावली 2025

अमावस्या तिथि 2025

प्रारम्भ: 20 अक्टूबर 2025, दोपहर 3:44 बजे से
समाप्ति: 21 अक्टूबर 2025, शाम 5:54 बजे तक

*** मुख्य जानकारी:**

1. अमावस्या की रात - 20 अक्टूबर 2025
2. इसी दिन दीपावली एवं लक्ष्मी पूजन करना शास्त्रसम्मत एवं फलदायी रहेगा।
3. 21 अक्टूबर की रात प्रतिपदा तिथि प्रारंभ हो जाएगी।

20 अक्टूबर 2025 के प्रमुख पूजन मुहूर्त

1. रूप चौदस स्नान: प्रात: 4:46 से 6:25 बजे तक
2. अभिजीत मुहूर्त: 11:48 से 12:34 बजे तक
3. संध्या पूजा: शाम 5:57 से 7:12 बजे तक
4. लक्ष्मी पूजा: शाम 7:23 से 8:27 बजे तक
5. प्रदोषकाल: 5:57 से 8:27 बजे तक
6. वृषभकाल: 7:23 से 9:22 बजे तक
7. निशीथ पूजा: रात 11:47 से 12:36 बजे तक

महत्वपूर्ण सुझाव:

1. दीपावली पूजा 20 अक्टूबर की रात को ही करें।
2. यह समय शुभ, सिद्ध और सर्वोत्तम फलदाई माना गया है।

महत्वपूर्ण हैं पांच दिवसीय दीवाली

दीपावली सप्ताह का पहला दिन : धनतेरस

धनतेरस (धन्वंतरि त्रयोदशी) दीपावली सप्ताह का पहला दिन है, जो दीपावली उत्सव की शुरुआत का प्रतीक है। दरअसल, यह हिंदू कैलेंडर के अनुसार कृष्ण पक्ष का 13वां चंद्र दिन है, जो कार्तिक महीने का अंधेरा पखवाड़ा है।

धनतेरस एक विशेष दिन है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि भगवान धन्वंतरि इस दिन समुद्र से मानव जाति की भलाई के लिए आयुर्वेद, जो एक चिकित्सा विज्ञान माना जाता है, लेकर आए थे। इस दिन बड़ी संख्या में खरीदारी होती है, विशेष रूप से सोना, चांदी, कीमती पत्थर, गहने, नए कपड़े और बर्तन।

सूर्यास्त के समय हिंदू स्नान करते हैं और मृत्यु के देवता यमराज की सुरक्षा के लिए एक प्रज्वलित दीपक और प्रसाद (पूजा के दौरान दी जाने वाली मिठाई) के साथ प्रार्थना करते हैं। यह प्रसाद तुलसी के पेड़, पवित्र तुलसी या आंगन में किसी भी पवित्र पेड़ के पास रखा जाता है।

दीपावली का दूसरा दिन : छोटी दीपावली

काली चौदस या नरक चतुर्दशी, दीपावली सप्ताह के दूसरे दिन के रूप में जानी जाती है। इसे छोटी दीपावली भी कहते हैं। भारत के कुछ हिस्सों में दीपावली के दूसरे दिन मनाया जाता है यह त्योहार। ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण ने इस दिन दुनिया को आतंक से मुक्त करने के लिए नरकासुर राक्षस का वध किया था। ऐसा माना जाता है कि इस दिन वर्ष भर की थकान को दूर करने के लिए शरीर पर तेल से मालिश करके स्नान करना चाहिए ताकि दीपावली को जोश और करुणा के साथ मनाया जा सके। यह भी माना जाता है कि इस दिन आपको दीया नहीं जलाना चाहिए या अपने घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। हालांकि आधुनिक समय में छोटी दीपावली पर लोग 'एक खुशहाल, सफल दीपावली' की कामना करने के लिए एक-दूसरे के पास जाते हैं और उपहारों और मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं।

दीपावली सप्ताह का तीसरा दिन : वास्तविक दीपावली दिवस

असली दीपावली, दीपावली के 5 दिनों के उत्सव में तीसरे दिन होती है। यह वह दिन है जब देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। हिंदू शुद्ध होकर अपने परिवार और पंडित (पुजारी) के साथ मिलकर देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं, ताकि समृद्धि और धन का आशीर्वाद, बुराई पर अच्छाई की जीत और अंधेरे पर प्रकाश की जीत हो। लोग अपने घरों में दीये और मोमबत्तियां जलाते हैं और पूरे भारत में लाखों पटाखे जलाए जाते हैं और सड़कों पर रंग-बिरंगी रोशनियां की जाती हैं।

दीपावली सप्ताह का चौथा दिन : दीपावली के बाद विश्वकर्मा पूजा

दीपावली पर्व के पांच दिनों में से चौथा दिन भारत में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। इस दिन को गुजरात जैसे पश्चिमी राज्य में अपने कैलेंडर के अनुसार नए वर्ष, बेस्टू वरस, के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

उत्तरी भारतीय राज्यों में इस दिन लोग अपने उपकरणों और हथियारों की पूजा करते हैं, आमतौर पर गोवर्धन पूजा के दिन विश्वकर्मा पूजा भी होती है। इस दिन सभी व्यवसाय बंद रहते हैं। इस दिन को अन्नकूट के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान कृष्ण कई हजार साल पहले ब्रज के लोगों को गोवर्धन पूजा में लाए थे। तब से हर साल ब्रज लोगों की पहली पूजा के सम्मान में गोवर्धन की पूजा करते हैं।

दीपावली सप्ताह का 5 वां दिन : भाई दूज

दीपावली के 5 दिनों में से पांचवां दिन भाई दूज या भाई बीज दिवस के रूप में मनाया जाता है। वैदिक काल के दौरान यम (यमराज, मृत्यु के देवता) अपनी बहन यमुना के पास इसी दिन आए थे। उसने अपनी बहन को एक वरदान (वरदान) दिया कि जो व्यक्ति उस दिन उसके पास जाएगा, वह सभी पापों से मुक्त हो जाएगा और मोक्ष या परम मुक्ति प्राप्त करेगा।

तब से, भाई अपनी बहनों और उनके बच्चों का हालचाल जानने के लिए उनके पास जाते हैं, और बहनें अपने भाइयों के लिए प्यार की निशानी के रूप में मिठाइयां तैयार करती हैं इस दिन दीपावली पर्व के पांच दिनों का समापन होता है।

दीपावली और कमल

कीचड़ में खिलने वाला पुष्प कमल भारतीय संस्कृति में सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। इसी पुष्प पर विराजमान लक्ष्मी सौभाग्यदायी है। एक पुरानी मान्यता के अनुसार लक्ष्मी की उत्पत्ति भी कमल पुष्प से मानी गई है, इसीलिए उन्हें पद्मा भी कहा जाता है।

श्रीसूक्त में लक्ष्मी को पद्मिनी, पद्मवर्णा, पद्मा और पद्महस्ता आदि नामों से संबोधित किया जाता है। आदिकाल से ही कमल पुष्प सबका मन मोह लेने वाला रहा है। हमारे धार्मिक ग्रंथों में से पुष्पों का राजा कहा गया है। सिंधुघाटी, मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त अवशेषों व मोहरों पर कमल के चित्र अंकित होना इसकी महत्ता को और अधिक बढ़ा देते हैं। पुरातात्विक स्तंभों पर भी इस पुष्प का अंकन हुआ है। ऐतिहासिक गुफाओं के भीत्ति चित्रों में इसका प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। पुरातन प्रतिमाओं में लक्ष्मी और कमल के संबंध को आत्मीयता के साथ दर्शाया गया है। हमारे देश के कवियों ने भी अपनी रचनाओं और काव्यों में कमल का भरपूर वर्णन किया है। संत तुलसीदास ने तो भगवान राम के शारीरिक सौंदर्य को कमल की उपमा से ही अलंकृत किया है।

नव कंज लोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारूणम्

कमल भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का प्रतीक रहा है। यह मानव जाति को यह संदेश देता है कि मनुष्य को कीचड़ में रहते हुए भी उसमें डूबना नहीं चाहिए। अर्थात् मानव को

संसाररूपी मोह-माया और लालच के कीचड़ में रहते हुए भी निस्वार्थभाव से मानव धर्म अपनाते हुए कमल की भांति हमेशा ऊंचे उठे रहना चाहिए। भारतीय भाषाओं में इसे अनेक नामों से जाना जाता है। खिले हुए कमल का सौंदर्य देखकर कोई भी व्यक्ति आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाता है। इसी कारण भारतीय देवी-देवताओं ने इसे अपना प्रिय पुष्प बनाया है। भारत के राष्ट्रीय चिन्ह अशोक स्तंभ के शीर्ष में भी कमल का स्वरूप दिखाई देता है।

देवग्रहों में भी कमल की सुंदर आकृतियां अलंकृत की गई है। कीचड़ में खिलने वाला यह पुष्प संसार के सभी धर्मों एवं संस्कृति में आदर प्राप्त है। लक्ष्मी प्रिय होने के कारण हिन्दू धर्म में यह विशेष पूजनीय है।

आतिशबाजी में सावधानी बरतें

दिवाली एक ऐसा त्योहार है जिसको लेकर खासकर बच्चों, किशोरों में खूब उत्साह होता है और वे कई दिन पहले से ही आतिशबाजी शुरू कर देते हैं। त्योहार का आनंद जरूर उठाएं, लेकिन अगर आतिशबाजी करते समय थोड़ी सावधानी बरतेंगे, तो दिवाली का मजा दोगुना हो जाएगा...

- किसी धातु के बर्तन में रखकर पटाखे चलाने से बचें, क्योंकि कई बार मेटल टूटने से घातक चोट लग सकती है। ऐसी घटनाएं हर बार दीपावली में कहीं न कहीं देखने-सुनने को मिल जाती हैं।
- हमेशा लाइसेंसधारी और विश्वसनीय दुकानों से ही पटाखे खरीदें। पटाखों के ऊपर लिखे हुए दिशा-निर्देशों का पालन करें। जिन पटाखों से परिचित हैं, उन्हें ही खरीदें। नए पटाखों से सर्वाधिक दुर्घटनाएं होती हैं। बेहतर होगा कि दुकानदार से ही पटाखों को फोड़ने के बारे में पूछताछ कर लें।
- पटाखे चलाते समय यथासंभव सूती और चुस्त कपडे पहनें।
- बच्चों को अकेले पटाखे नहीं छोडनें दें।
- छोटे बच्चों के हाथ में पटाखे न पकडायें, फुलझडी के गर्म तारों को पानी में रखते जायें, कभी-कभी दौड़ते बच्चों के पांव गरम फुलझडी पर पड़ सकते हैं, इसलिये बच्चों को जूता पहनाकर रखें।
- फुलझडी के अलावा किसी भी पटाखे को हाथ में लेकर न चलायें, खासकर अनार को कभी नहीं। क्योंकि सबसे ज्यादा दुर्घटना अनार में होती है।
- बच्चों को समझायें कि वे पटाखे चलाते समय झुके नहीं अन्यथा पटाखा फटने से उनका चेहरा जल सकता है। बच्चों को हाथ में पटाखा छोड़ने से भी रोकें।
- आतिशबाजी करते समय बडे पात्र में पानी अवश्य रखें, ताकि आवश्यकता पडने पर आग बुझाने के काम आ सके।
- राकेट के लिये बोतल का प्रयोग करें, बोतल में राकेट सीधा खडा करें, ताकि वह सीधा ऊपर जाये।
- घर लाये गये पटाखों को अबोध बच्चों की पहुंच से दूर रखें, क्योंकि इनमें लगे रासायनिक तत्व बच्चों के मुंह में जाने से खतरनाक हो सकता है।
- पटाखे चलाते समय नारियल तेल, बालू, पानी, बरनॉल, कम्बल या रजाई जैसी वस्तु साथ रखें, ताकि किसी तरह की दुर्घटना होने पर तुरन्त काबू पाया जा सके।

- मयंक मेहरा • डॉ. के.एस. यादव
- डॉ. वैशाली शर्मा

कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर (म.प्र.)
जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर (म.प्र.)

काला मक्का दूर करेगा कुपोषण

कमाई बढ़ने के साथ भरपूर मिलेगा आयरन और जिंक

आपने सफेद और पीले मक्के का नाम तो सुना ही होगा। लेकिन आज हम आपको बताने वाले काले मक्के के बारे में। जिसके एक भुट्टे की कीमत बाजार में 200 रुपये बताई जा रही है। भारत में काले मक्के की खेती की जा रही है।

पौषक तत्वों से भरपूर है काला मक्का

लाल काला मक्का कुपोषण से भी लड़ेगा और किसानों को भरपूर फायदा भी पहुंचाएगा। देश में पहली बार छिंदवाड़ा के कृषि अनुसंधान केंद्र में लाल काला यानी रंगीन मक्के पर रिसर्च किया गया है। सालों से उगाई जा रही देशी मक्का किस्मों पर शोध करके कृषि वैज्ञानिकों ने मक्का की एक नई प्रजाति जवाहर मक्का 1014 विकसित की है। मक्के की इस प्रजाति में आयरन, कॉपर और जिंक की मात्रा अधिक है, जो कुपोषण से लड़ने में कारगर साबित होगी। इसका उपयोग स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों में किया जा सकता है। कृषि अनुसंधान केंद्र में विकसित मक्का की यह पहली किस्म है जो न्यूट्रीरिच या बायो फोर्टिफाइड है। वहीं आमतौर पर मक्का के दानों का रंग पीला होता है, लेकिन इस नई प्रजाति का रंग लाल, काला कत्थई है।

काले मक्के में एंथोसायनिन नामक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो पुरानी बीमारियों से लड़ने, सूजन कम करने और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। इसमें फाइबर, विटामिन और खनिज भी होते हैं, जो पाचन में सुधार करते हैं। काले मक्के के पौधे सामान्य मक्के की तुलना में दोगुना अधिक लंबे होते हैं, इसीलिए एक पौधे पर दोगुना अधिक फल भी आते हैं। साइज भी दूसरे मक्के से थोड़ा बड़ा होता है, इसलिए वजन भी अधिक होता है।

लेकिन कई किसानों को इसकी जानकारी नहीं है। ऐसे में हम आपको काले मक्के की खेती के बारे में जानकारी देने वाले हैं। इस मक्के की खास बात ये है की, ये कुपोषण को दूर करेगा। जिसकी वजह से मार्केट में काले मक्के की खेती की कीमत अच्छी मिलती है। तो आइए जानते है किसान काले मक्के की खेती करके कैसे अपनी आय बढ़ा सकते हैं।

विदेशो में की जाती है काले मक्के की खेती

इन काले मक्के की खेती पीले मक्के की तरह नहीं की जाती है, जो पूरी दुनिया में उगाया जाता है। दुनिया में कुछ ही जगहों पर ये मौजूद हैं। पेरू वह स्थान है जहां इसकी सबसे अधिक खेती की जाती है। इसे वहां मेज मोरडो के नाम से जाना जाता है। जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में इसे ब्लैक मैक्सिकन कॉर्न कहा जाता है। दक्षिण अमेरिका के बाहर यह शायद ही कभी पाया जाता है। इसे बढ़ने के लिए अत्यधिक गर्म मौसम की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, फल लगने के बाद इसे बहुत अधिक बारिश की आवश्यकता होती है। इस हालात में काले मक्के की खेती इसे दुनियाभर में केवल कुछ ही स्थानों पर उगाया जा सकता है।

सालों से उगाई जा रही देशी मक्का किस्मों पर शोध करके कृषि वैज्ञानिकों ने मक्का की एक नई प्रजाति जवाहर मक्का 1014 विकसित की है। मक्का की इस प्रजाति में आयरन, कॉपर और जिंक की मात्रा अधिक है। किसान इसे बेचकर अच्छी कमाई कर सकते हैं।

जायद सीजन की फसलों की बुवाई का समय चल रहा है। इसमें किसान काले मक्के की खेती कर सकते हैं। दरअसल, बदलते मौसम के इस दौर में मक्के की खेती का महत्व काफी तेजी से बढ़ता जा रहा है। इस फसल की खासियत यह है कि इसे महज 3 महीने में तैयार किया जा सकता है और कमाई भी होती है। वहीं, इसका उत्पादन भी अन्य फसलों से अधिक होता है। यही कारण है कि किसान इस मक्के को उगाना पसंद करते हैं। माना जाता है कि काला मक्का कुपोषण से भी लड़ने में फायदेमंद होता है।

मक्के की इस वैरायटी से किसानों को भरपूर फायदा भी मिलता है। दरअसल देश में पहली बार छिंदवाड़ा के कृषि अनुसंधान केंद्र में काला यानी रंगीन मक्के पर रिसर्च किया गया है। इस मक्के की खास बात यह है कि इसमें भरपूर मात्रा में जिंक, कॉपर और आयरन है। ऐसे में आइए जानते हैं कि कैसे करें काले मक्के की खेती।

ऐसे करें मक्के की खेती

काले मक्के की यह नई किस्म 95-97 दिन में तैयार हो जाती है। वहीं बात करें इसकी उपज क्षमता की तो किसान प्रति एकड़ में 8 किलो बीज लगाकर 26 क्विंटल तक उत्पादन ले सकते हैं। इसकी सिल्क 50 दिन में आती है। यह प्रजाति तना छेदक के प्रति सहनशील है। इसके अलावा वर्षा आधारित क्षेत्र खासकर पठारी क्षेत्रों के लिए यह बेहद उपयुक्त है। किसान अगर इस किस्म की खेती करना चाहते हैं तो इसकी खेती कतार में की जाती है। वहीं कतार से कतार की दूरी 60 से 75 सेमी होनी चाहिए।

मक्के का मिलेगा अच्छा भाव

किसानों को अक्सर चिंता होती है कि अगर कोई नई प्रजाति है तो बाजार भाव कैसा होगा और उत्पादन प्रभावित तो नहीं होगा। ऐसे में स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी इस मक्के का बाजार भाव सामान्य मक्के की तुलना में ज्यादा होगा। सबसे खास बात यह है कि इसकी उपज में कोई फर्क नहीं आएगा। पीले मक्के की तरह ही इसकी पैदावार भी अधिक होगी।

भारत की श्वेत क्रांति (दुग्ध उत्पादन) में रबी चारे की उन्नत प्रजातियों का महत्व

- **डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह यादव,**
- **डॉ. अमित कुमार झा**

भारतीय चारा अनुसंधान परियोजनाएं, जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भारत में पशुधन का महत्व बहुआयामी है। यह न केवल सकल घरेलू उत्पाद में योगदान देता है बल्कि ग्रामीण आजीविका, पोषण सुरक्षा और सांस्कृतिक विरासत का भी अभिन्न अंग है। यह दूध, मांस और अंडे जैसे खाद्य पदार्थ प्रदान करता है, किसानों को आय का एक स्थिर स्रोत देता है और जैविक खाद व परिवहन के लिए आवश्यक है। इसके अलावा पशुधन क्षेत्र निर्यात और विदेशी मुद्रा आय को बढ़ाता है और यह जैविक खाद व बायोगैस प्रदान करने का एक स्थायी स्रोत है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है: लगभग 20.5 मिलियन लोग अपनी आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर हैं। छोटे कृषक परिवारों की आय में पशुधन का योगदान 16 प्रतिशथ है, जबकि सभी ग्रामीण परिवारों के लिए यह औसत 14 प्रतिशत है। पशुधन ग्रामीण समुदाय के दो-तिहाई लोगों को आजीविका प्रदान करता है। यह भारत की लगभग 8.8 प्रतिशत आबादी को रोजगार भी प्रदान करता है। भारत में पशुधन संसाधन विशाल हैं।

कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र के सकल मूल्य संवर्धन में पशुधन का योगदान 2014-15 के 24.38 प्रतिशत से बढ़कर 2022-23 में 30.23 प्रतिशत हो गया है। पशुधन क्षेत्र ने 2022-23 में कुल सकल मूल्य संवर्धन में 5.50 प्रतिशत का योगदान दिया। 2014-15 से 2022-23 तक यह 12.99 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ा।

भारतमें 20वीं जनगणना के अनुसार पशुधन में भारत की स्थिति

पशुधन का नाम	दुनिया में भारत का स्थान
पशुधन स्वामी	विश्व में सबसे अधिकः 535.78 मिलियन
गाय	विश्व में दूसरे स्थानः192.49 मिलियन
भैंसों की आबादी	विश्व में प्रथमः109.85 मिलियन
बकरियों की आबादी	विश्व में दूसरे स्थान परः 148.88 मिलियन
भेड़ों की आबादी	विश्व में तीसरा स्थानः 74.26 मिलियन
ऊँटों की आबादी	दुनिया मेंदसवें स्थान परः 2.5 लाख
बत्तखों और मुर्गियों की आबादी	विश्व में पांचवें स्थान परः 851.81 मिलियन (दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा पोल्ट्री बाजार)
मछली	मछली का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक

(भारत दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है और वैश्विक दुग्ध उत्पादन में 24.76 प्रतिशत का योगदान देता है। स्रोतः 20वीं पशुधन जनगणना)

आर्थिक महत्व

जीडीपी और रोजगारः पशुधन क्षेत्र भारत के सकल मूल्य वर्द्धन में महत्वपूर्ण योगदान देता है और देश की लगभग 8.8 प्रतिशत आबादी को रोजगार प्रदान करता है।

ग्रामीण आय और गरीबी उन्मूलनः यह ग्रामीण परिवारों की आय का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है, विशेषकर छोटे और भूमिहीन किसानों के लिए और गरीबी उन्मूलन में मदद करता है।

निर्यात और विदेशी मुद्राः भैंस का मांस, डेयरी उत्पाद और मुर्गी उत्पादों के निर्यात से भारत को महत्वपूर्ण विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

पर्यावरणीय और कृषि महत्व

जैविक खादः पशुधन से प्राप्त खाद मिट्टी की उर्वरता में सुधार करती है, जिससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम होती है और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा मिलता है।

बायोगैसः गोबर का उपयोग बायोगैस बनाने के लिए किया जा सकता है, जो स्वच्छ और टिकाऊ ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

सांस्कृतिक भूमिकाः पशुधन का भारत की संस्कृति और धर्म में गहरा महत्व है, जो विभिन्न त्योहारों और अनुष्ठानों का हिस्सा है।

महिला सशक्तिकरणः ग्रामीण महिलाएँ पशुधन गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होती हैं, जिससे उनकी वित्तीय स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति में सुधार होता है।

पशुपालकों के सामने पशुआहार सम्बन्धी चुनौतियाँ : कृषि एवं दुग्ध उत्पादन के साथ इन बहुआयामी महत्वों को देखते हुए पशुधन का संवर्धन पशुपालकों के लिए चुनौती है जिसमें पशु चारा की उपलब्धता सबसे बड़ी समस्या है जिसके कारण पशुपालक दुग्ध उत्पादन व्यवसाय से दूर होते जा रहे हैं। पशुपालकों की इस समस्या निवारण के लिए भारतीय कृषि अनुशंधान परिषद् नई दिल्ली के तत्वाधान में भारतीय चारा अनुशंधान संस्थान, झांसी, देश में चारा फसलों की किस्मों के विकास पर निरंतर कार्य कर रहा है, जिससे पशुओं को गुणवक्ता युक्त हरा चारा वर्ष भर मिल सके व देश में दुग्ध उत्पादन के साथ पशुपालकों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो और देश में श्वेत क्रांति को अविरल रखा जा सके।

रबी चारे की उन्नत प्रजातियाँः वर्तमान समय में किसान खाद्यान और दलहनी फसलों की तुलना में 0.05 प्रतिशत भूमी पर चारा फसलों का उत्पादन करते हैं। जिस कारण वे पशुधन को पर्याप्त और गुणवक्ता युक्त चारा नहीं दे पाते और उनको पशुपालन व्यावसाय से अपेक्षाकृत कम लाभ मिलता है। इस स्थिति से निपटने के लिए चारे की उन्नत प्रजातियों की बड़ी भूमिका है।

मध्य प्रदेश में रबी में उगाई जाने वाली चारा फसलों में बरसीम, जई और अकरी प्रमुख हैं जिनकी उन्नत किस्में निम्न हैं-

बरसीम की किस्में

जवाहर बरसीम 8.17 : अवधि 175-180 दिन हरे चारे का उत्पादन 850-900 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पांच कटाई में।

विशेषताः यह प्रजाति केंद्रीय प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा सन् 2024 में अनुमोदित की गई है। इसकी पहली कटाई 55-60 दिनों में. बाद की कटाई 22-25 दिन के अंतर में की जाती है। यह प्रजाति मध्य भारत के लिए विकसित की गई है। इसको दो कटाई के बाद छोड़ने पर बीज उत्पादन क्षमता 4-5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 19 प्रतिशत है।

जवाहर बरसीम 05-9: अवधि 180-185 दिन हरे चारे का उत्पादन 875-900 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पांच कटाई में।

विशेषताः यह प्रजाति केन्द्रीय प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा सन् 2018 में अनुमोदित की गई है। यह किस्म उत्तरी भारत के लिए विकसित कि गई किस्मों में से एक है। उत्तरी भारत के साथ-साथ मध्य प्रदेश में भी यह किस्म चारा और बीज उत्पादन में अग्रणी है। इसकी पहली कटाई 55 दिनों में तथा बाद की कटाई 22-25 दिन के अंतर में की जाती है। इसमें अधिक शाखाएं व हरी पत्तियों रहती हैं। यह सभी प्रकार के रोग के लिए प्रतिरोधी है। दो कटाई लेने के बाद इसकी बीज उत्पादन क्षमता 5.0-6.0 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह बरसीम के बीज उत्पादन बाली किस्मों में प्रमुख किस्म है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 18-20 प्रतिशत है।

जवाहर बरसीम 1: अवधि 190- 200 दिन हरे चारे का उत्पादन 750-850 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

विशेषताः यह प्रजाति म.प्र. राज्य प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा सन् 1982 में अनुमोदित की गई है। यह जीव दव्य के चयन के द्वारा विकसित की गई है। इसकी पहली कटाई 55-60 दिनों में तथा बाद की कटाईयां 22-25 दिन के अंतर में की जाती हैं। यह प्रजाति संपूर्ण भारत वर्ष में प्रचलित है। इसकी बीज उत्पादन क्षमता 3.5- 4 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 17-19 प्रतिशत है।

जवाहर बरसीम 5: अवधि 185-195 दिन हरे चारे का उत्पादन 800-850 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

विशेषताः यह प्रजाति म.प्र. राज्य प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा सन् 2005 में अनुमोदित की गई है। यह एक म्युटेंट (सी 3-90-14) के चयन प्रक्रिया द्वारा विकसित की गई है। इसकी पहली कटाई 55-60 दिनों में तथा बाद की कटाई 22-25 दिन के अंतर में की जाती है। यह किस्म जड़ गलन रोग के लिए प्रतिरोधी है। इसकी बीज उत्पादन क्षमता 4-5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 18-20 प्रतिशत है।

जई की प्रमुख किस्में

जवाहर जई 5-304: अवधि 135-140 दिन की होती है। यह बहुकटाई के लिए उपयुक्त किस्म है।

विशेषताः यह किस्म गामा किरणों के प्रयोग विधि से विकसित की गई है। इसका अनुमोदन राष्ट्रीय प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा सन् 2020 में अनुमोदित किया गया है। यह प्रजाति बहु कटाई के लिए उपयुक्त किस्म है, जो अधिक मात्रा में चारा प्रदान करतीहै। इसकी प्रथम कटाई 55-60 की अवस्था पर एवं दूसरी कटाई 50 प्रतिशत पुष्प आने की अवस्था में की जाती है। इस किस्म में हरे चारे का उत्पादन क्षमता 600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति झुलसा एवं जड़ गलन सूत्र कृमि रोगों के लिये प्रतिरोधी हैं। इस किस्म में प्रोटीन की मात्र 9.8 प्रतिशत है। यह किस्म मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड के अर्ध सिंचित एवं सिंचित क्षेत्र के लिए विकसित की गयी है।

जवाहर जई 10-506: अवधि 135-145 दिन यहबहु उद्देश्यी किस्म है जो चारा एवं दाना दोनों के लिए उपयुक्त।

विशेषताः यह जेएमओ 271 गुणा केंट के क्रास द्वारा वशावली विधि से विकसित की गई है। इसका अनुमोदन राष्ट्रीय प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा सन् 2020में अनुमोदित किया गया हैए यह प्रजाति बहु उद्देश्यीय किस्म है, जो चारा और दाना दोनों के लिये उपयुक्त पाई गई है। इसकी प्रथम कटाई 55-60 की अवस्था में करने के बाद बीज बनाने के लिए छोड़ दी जाती है। यह किस्म हरा चारा उत्पादन 255-260 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं एक कटाई के बाद 23.70 क्विंटल प्रति हेक्टेयर बीज उत्पादन करने में सक्षम है। यह प्रजाति पर्ण झुलसा एवं जड़ गलन सूत्र कृमि रोगों के लिये प्रतिरोधी हैं। यह किस्म पशु एवं मानव दोनों के लिए उपयुक्त है। इस किस्म में प्रोटीन की मात्रा 8.9 प्रतिशत है।

जवाहर जई 1: अवधि 140-150 दिन हरे चारे का उत्पादन 550-600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

विशेषताः यह केंट एवं यू.पी.ओ. 50 के क्रास द्वारा वंशावली विधि से विकसित की गई है। बहु कटाई वाली किस्म है। यह प्रजाति मप्र राज्य प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा सन् 2005 में अनुमोदित की गई। इसकी पहली कटाई 50 से 55 दिन में तथा दूसरी कटाई 50 प्रतिशत फूल आने की अवस्था में की जाती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 8 से 10 प्रतिशत तथा बीज उत्पादन क्षमता 17 से 19 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

जवाहर जई 03-91: अवधि 130-140 दिन हरे चारे का उत्पादन 350-400 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

विशेषताः यह ओ.एस. 7 एवं जे.एच.ओ. 822 के क्रास द्वारा वंशावली विधि से विकसित की गई है। इसका अनुमोदन राष्ट्रीय प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा सन् 2010 में अनुमोदित किया गया है। यह प्रजाति एक कटाई के लिय उपयुक्त पाई गई है एवं इसकी कटाई 50 प्रतिशत फूल आने की अवस्था में की जाती है। यह प्रजाति पर्ण झुलसा एवं जड़ गलन सूत्र कृमि रोगों के लिये प्रतिरोधी हैं। इसकी बीज उत्पादन क्षमता 14 से 16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हैं।

अकरी कि उत्तम किस्म

जवाहर विसिया-1: अवधि 90 से 95 दिन, हरे चारे का उत्पादन 250 से 275 क्विं. प्रति हेक्टर है। (शेष पृष्ठ 17 पर)

दलहन आत्मनिर्भर मिशन योजना का सजीव प्रसारण

पन्ना। पीएम कृषि धन धान्य योजना एवं दलहन आत्मनिर्भरता मिशन एवं कृषि अवसंरचना कोष, पशुपालन, मत्स्य पालन और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की 2100 से अधिक परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर पूसा नई दिल्ली से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा किसान भाई-बहनों को 42000 करोड़ की कृषि परियोजनाओं का उपहार दिया गया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का सजीव प्रसारण कृषि विज्ञान केन्द्र, पन्ना में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संतोष सिंह यादव, उपाध्यक्ष जिला पंचायत पन्ना संजीव खरे, प्रमण्डल सदस्य जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर, श्री तरूण पाठक वरिष्ठ समाज सेवी,श्री अशोक चतुर्वेदी, अतिरिक्त मुख्य

कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत पन्ना, संजय परिहार, परियोजना अधिकारी मनरेगा जिला पंचायत पन्ना ए.पी. सुमन, उप संचालक कृषि, कृषि विज्ञान डॉ. पी.एन. त्रिपाठी, डॉ. आर.के. जायसवाल, डॉ. आर.पी. सिंह, रितेश बागोरा, देशराज प्रजापति, जया कोरी, समर्थन संस्था से ज्ञानेन्द्र तिवारी, पृथ्वी ट्रस्ट से समीना यूसुफ सहित विभागीय अधिकारी/कर्मचारी, कृषि महाविद्यालय पन्ना के रावे के छात्र तथा जिले के कृषक बंधुओं की लगभग 300 उपस्थिति रही। कार्यक्रम में संतोष यादव, संजीव खरे तथा महिला कृषकों के द्वारा के.वी.के. परिसर स्थित प्रदर्शन ईकाईयों का भ्रमण किया गया। कार्यक्रम का संचालन दिव्यांशिका त्यागी एवं आभार प्रदर्शन डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा किया गया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के संबोधन का सीधा प्रसारण

जबलपुर। डॉ. ए.के. विश्वकर्मा, परियोजना समन्वयक (तिल एवं रामतिल), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मार्गदर्शन में एवं डॉ. के.एन. गुप्ता (कृषि वैज्ञानिक) के नेतृत्व में अन्नदाताओं का सम्मान, समृद्ध राष्ट्र का निर्माण विषय पर आधारित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का दिल्ली दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम का, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (तिल एवं रामतिल) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय परिसर, जबलपुर सीधा प्रसारण किया गया। इस अवसर पर 50 से अधिक महिला एवं पुरूष किसानों की सहभागिता रही।

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के शुभारंभ का सीधा प्रसारण

धार। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर, पूसा नई दिल्ली से प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का शुभारंभ का सीधा प्रसारण कृषि विज्ञान केन्द्र, धार में किया गया। कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञों द्वारा किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों, बागवानी, मृदा विज्ञान और जलवायु-संवेदनशील, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, उद्यानिकी फसलों में प्रवर्धन आदि विषयों पर जानकारी दी गई। कृषि विज्ञान केन्द्र धार के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान ने कृषकों से रबी फसल की तैयारियों एवं प्रबंधन पर विस्तृत चर्चा कर सुझाव दिये। केन्द्र की वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. अंकिता पाण्डेय ने किसानों को योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी साझा की।

दीपावली के शुभ अवसर पर समस्त किसान भाइयों एवं कृषि विक्रेताओं को दीपावली की

श्री प्रखर जैन

हार्दिक शुभकामनाएं

खाद, बीज, पेस्टीसाइड्स के अधिकृत विक्रेता

मे. नंदकिशोर कोमल चंद जैन

नया बाजार सब्जी मंडी, सागर,
जिला- सागर (म.प्र.) मो.- 7974745335

(पृष्ठ 16 का शेष) भारत की श्वेत क्रांति...

विशेषता: एक नई महत्वपूर्ण हरा चारा वाली फसल है। इसकी खेती रबी ऋतु में असिंचित क्षेत्रों में सफलता पूर्वक की जा सकती है। यह फसल वर्षा आधारित क्षेत्रों में दुग्ध उत्पादन करने वाले किसानों के लिए एक उत्तम फसल है। इसके पौधों की बढ़वार काफी तेज होती है। हरे चारे के लिए इसकी कटाई 50 प्रतिशत पुष्प आने की अवस्था में लगभग 90 से 95 दिन कि अवधि में की जाती है। दलहनी फसल होने के कारण इसकी खेती से भूमि कि गुणवक्ता में सुधार होता है। इसके शुष्क पदार्थ की पाचनशीलता 62.65 प्रतिशत होती है एवं जिसमें 15.5 प्रतिशत प्रोटीन उपलब्ध रहता है। असिंचित क्षेत्रों में हरे चारे कि परेशानी से जूझ रहे किसानों के लिए हरे चारे कि कमी को दूर करने के लिए विसिया उत्तम पशु आहार है।

अकरी (विसिया)

उपज: जब पौधों की ऊंचाई 80 से 85 सेंटीमीटर की हो जाए और 50 प्रतिशत पौधों में पुष्प आजाए उस अवस्था में कटाने पर हरे चारे का उत्पादन 250 से 275 क्विंटल प्रति हेक्टर प्राप्त किया जा सकता है। इसका उचित प्रबंधन कर के इससे 8 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर शुद्ध बीज उत्पादन किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना का प्रचार इफको ने किसान सभाओं के माध्यम से किया

रायपुर। कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और तकनीकी उन्नति की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड (इफको) ने प्रधनमंत्री धन धान्य कृषि योजना का सीधा प्रसारण कार्यक्र को छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में सफलतापूर्वक संपन्न कराया। यह प्रसारण प्राथमिक कृषि सेवा सहकारी समितियों, कृषि विज्ञान केंद्रों एवं इफको बाजार केंद्रों के माध्यम से किया गया।

रायपुर में आयोजित कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना किसानों की समृद्धि का माध्यम बनेगी। यह योजना आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक प्रबंधन और सतत कृषि विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम स्थल पर इफको द्वारा स्टाल भी लगाया गया जिसमें मुख्यमंत्री ने उपस्थित किसानों से अपील की कि वे नैनो यूरिया, नैनो डीएपी और जैव उर्वरकों का उपयोग बढ़ाएँ ताकि उत्पादन लागत घटे, मिट्टी की उर्वरता बनी रहे और पर्यावरण संरक्षण में योगदान हो। इफको के विभिन्न इफको ई-बाजार केंद्रों के माध्यम से किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले उर्वरक, बीज, कीटनाशक और कृषि उपकरण उचित दरों पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इस अवसर पर कृषि विभाग, सहकारिता विभाग तथा इफको के अधिकारी विभिन्न स्थानों पर उपस्थित रहे।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

**एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078**

सागर जिले में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री प्रखर जैन

**मे. नंदकिशोर कोमलचंद जैन
नया बाजार, सागर
जिला-सागर (म.प्र.)
मो. 7974745335**

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

•औषधीय•वन •सब्जी•फूल•बीज•स्प्रे पंप एवं पार्ट्स •कीटनाशक •जैविक खाद • गार्डन टूल •जैविक उत्पाद •ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - •निर्मल सीड्स, जलगांव •कलश सीड्स, जालाना •अंकुर सीड्स, नागपुर • वेस्टर्न सीड्स, गुजरात •दिनाकर सीड्स, गुजरात •सटिंड सीड्स, दिल्ली • फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना •स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई •जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर •स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर •अनु प्रोडक्ट्स लि. •श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

शहडोल में ACE ट्रैक्टर की नई डीलरशिप दित्या आटोमोटिव का शुभारंभ

शहडोल। ट्रैक्टर उद्योग में तेजी से आगे बढ़ रही एक्सन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) ट्रैक्टर ने विगत दिनों शहडोल में नई डीलरशिप दित्या आटोमोटिव का शुभारंभ किया। इस दौरान ACE ने 5 ट्रैक्टरों की डिलीवरी की।

इस अवसर पर ACE ट्रैक्टर लिमिटेड के चीफ जनरल मैनेजर सेल्स श्री रविन्दर सिंह खनेजा, जोनल हेड म.प्र.-छग श्री मनोज गर्ग, एरिया मैनेजर प्रवीण दुबे, दित्या आटोमोटिव के संचालक श्री विकास गौतम एवं जिले के ग्रामीण क्षेत्र के कई किसानों ने अपनी उपस्थिति दी। एक्सन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेट लिमिटेड के चीफ जनरल मैनेजर ने बताया कि एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट

लिमिटेड (ACE) भारत की अग्रणी कृषि उपकरण निर्माण और कृषि मशीनरी निर्माता कंपनी है जो ACE 2WD और 4WD विकल्पों में 15 हार्स पॉवर से 90 हार्सपॉवर तक के ट्रैक्टर का निर्माण करते हैं। ACE ट्रैक्टर अपनी मजबूत बनावट ईंधन कुशल तकनीक और लागत प्रभावी रखरखाव के साथ किसान समुदाय में बहुत लोकप्रिय व्यापक रूप से स्वीकृत और प्रशंसित है। ACE के सभी ट्रैक्टरों का निर्माण तीन प्रमुख नीतियों को ध्यान में रखकर किया जाता है। डीजल की खपत में बचत, अधिकतम टॉर्क ओर लागत प्रभावी रखरखाव प्रमुख है। ताकि किसानों की लागत कम लगे ओर मुनाफा ज्यादा हो। ACE ट्रैक्टर न्यूनतम डीजल खपत के साथ कम समय में अधिक कार्य करता है। ACE के चीफ जनरल मैनेजर श्री खनेजा ने बताया कि इस साल देशभर में मानसूनी बारिश सामान्य से अधिक होने के कारण त्यौहारी मौसम जो अक्टूबर माह में रहेगा ट्रैक्टर की मांग बढ़ेगी। रबी फसलों की बुवाई के लिये अनुकुल वातावरण होने से अक्टूबर-नवंबर का महीना ट्रैक्टर उद्योग के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

श्री खनेजा ने कहा कि केन्द्र सरकार ने ट्रैक्टर एवं अन्य कृषि उपकरणों के ऊपर जीएसटी का भार कम किया है जिससे इन उपकरणों की कीमतों में काफी कमी आयी है। इसका लाभ ACE ट्रैक्टर खरीदने वाले किसानों को मिलना शुरु हो गया है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून की हुई वापसी

नई दिल्ली। रिमझिम फुहारों से देश के पूरे हिस्से को भिगोने के बाद दक्षिण-पश्चिम मानसून 15 अक्टूबर की सामान्य तिथि के एक दिन बाद 16 अक्टूबर को पूरे देश से वापस चला गया। मौसम विज्ञान विभाग ने बताया कि इसी समय पूर्वोत्तर मानसून तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल, तटीय आंध्रप्रदेश, रायलसीमा, दक्षिण-आंतरिक कर्नाटक और केरल-माहे में दस्तक दे चुका है। इस वर्ष मानसून 25 मई को केरल पहुंचा था जो 2009 के बाद से भारतीय मुख्य भूमि पर इसका सबसे जल्दी आगमन था। दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण इस साल देश भर में सामान्य से अधिक बारिश हुई है। मध्यप्रदेश में औसत बारिश से 21 प्रतिशत अधिक बरसात हुई है।

इफको के श्री राठौर को मातृ शोक

रायपुर। इफको छत्तीसगढ़ के राज्य विपणन प्रबंधक श्री आर.के.एस. राठौर की माताजी श्रीमती सत्यवती राठौर का विगत दिनों मैनपुरी (उत्तरप्रदेश) में निधन हो गया। 92 वर्षीय श्रीमती सत्यवती राठौर पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थीं। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गयी हैं। दुख की इस घड़ी में कृषक दूत परिवार अपनी संवेदनायें व्यक्त करता है। साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता है कि पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें।

खेती को फायदेमंद बनाने का नायाब तरीका सीखें

क्या आपकी जमीन से खेती करके आपको कम आमदनी मिल रही है जिससे आप अपने खेती के खर्च को पूरा कर सकें? क्या आप खेती से निराश हो गए हैं और एक नया उपाय खोज रहे हैं जो आपको अधिक लाभ दे सके? यदि हाँ, तो हम आपके लिए एक नया अवसर लेकर आए हैं। अपनी खाली जमीनों, खेतों से सालाना लाखों-करोड़ों की कमाई करने के लिए हमारे साथ जुड़ें। हम आपको जमीन के चयन से लेकर फसल लगाने, उत्पादन और उत्पादन के शत-प्रतिशत विपणन तक की पूरी तकनीकी जानकारी और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

हम आपसे एक खेती की बात कर रहे हैं जो आपको अधिक लाभ प्रदान कर सकती है। AT और BP के पौधों की खेती एक बहुत ही उपयुक्त विकल्प है, जो आपको अधिक मुनाफा दे सकती है। इन पौधों की विशेषता और पोषण के कारण, इससे बाजार में उत्तम मूल्य मिल सकता है और आपको अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

एक एकड़ जमीन में 800 ऑस्ट्रेलियन टीक और 800 काली मिर्च फसल की खेती कर के आप साल का लाखों करोड़ों कमा सकते है।

- 30 सालों में 7 बार देश का सर्वश्रेष्ठ किसान का अवार्ड प्राप्त करने वाले अनुभवी किसानों के साथ एक दिशानिर्देश।
- देश का सर्वप्रथम सर्टिफाइड ऑर्गेनिक हर्बल फार्म्स के साथ मां दंतेश्वरी हर्बल समूह का समर्थन और संयुक्त विपणन
- कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों के साथ-साथ मिलेनियर फार्मर/रिचेस्ट फार्मर ऑफ इंडिया का अवार्ड भी दिया गया है मां दंतेश्वरी हर्बल समूह के डॉक्टर राजाराम त्रिपाठी को।

काली मिर्च के उत्पादन में छत्तीसगढ़ के किसान ने देश में बनाया नया कीर्तिमान

fssai SAMPDA

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :

मुख्य कार्यालय: मां दंतेश्वरी हर्बल ग्रुप

151, हर्बल इस्टेट, कोंडागांव बस्तर (छत्तीसगढ़) 494226

ईमेल- mdhorganic@gmail.com

प्रशासकीय कार्या. : जी 14 हर्बल इस्टेट, एचआर टावर के बगल में, अग्रसेन नगर (पुरानी अग्रोला कॉलोनी) रिंग रोड-1, रायपुर (छत्तीसगढ़) - 492013

मो. : 9425265105

फोन : 0771-2263433

सूचना : कृपया कार्यालयीन दिवसों में सुबह 11:00 से 5:00 संध्या के बीच ही फोन करें।

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन 0755-4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम...

संस्था का नाम...

पूरा पता...

ग्राम.......................पोस्ट.......................तहसील.......................

जिला.......................राज्य.......................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)....................... (शब्दों में).......................

बैंक का नाम....................... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.......................

दिनांक....................... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान....................... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक....................... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रेक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15–90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी,
मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार